क़ुरआन
के सबक़
डॉ. अब्दुल रजाक खान

अल्लाह के नाम से
जो बेइंतेहा मेहरबान और रहम करने वाला है।

क़ुरआन के सबक़

संकलन
डॉ. अब्दुल रजाक खान
एम. ए. पीएच. डी. (अंग्रेजी) पीएच. डी. (राजनीति) डी.डी. ई.

अलमास पब्लिकेशन्स

Quran Ke Sabaq
by. Dr. Abdul Razaq Khan

प्रकाशक: अलमास पब्लिकेशन्स
प्लॉट नं. 89, रघुनाथपुरी, झोटवाड़ा
जयपुर-302012
फोन: 0141-2342720
e-mail : drabdulrazaqkhan@gmail.com

पृष्ठ सज्जा और आवरण : शकील अहमद

मुद्रक : ए के आर्ट एन प्रिंट
209, मुकुंदगढ़ हाउस, संसारचंद्र रोड
जयपुर-302016 फोन-0141-5118432
संस्करण : 2012

पृष्ठ संख्या : 90

विषय-सूची

उन लोगों के नाम जो...

"अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानें और,

अल्लाह से डरें और,

उसकी सीमाओं (हदों) का खयाल रखें।"

जिन्होंने कुरआन समझ कर न पढा,

ताकि वे समझ जाएं और,

उस पर अमल करने की प्रेरणा लें, और

पूरे कुरआन को समझ कर

अमल करें।

दुआ

अल्लाह! ले चल मुझे
अंधेरों से रोशनी की तरफ
जिहालत से इस्लाम की तरफ
शिर्क से अल्लाह वाहिद की तरफ
बन्दों की गुलामी से अल्लाह की बंदगी की तरफ
बुराई से भलाई की तरफ
गुमराही से सीधे रास्ते की तरफ
नाकामयाबी से कामयाबी की तरफ
सब कुछ छोड़कर अल्लाह की रजा की तरफ
अल्लाह और रसूल की इताअत की तरफ
दुनिया और आखिरत में कामयाबी की तरफ
शैतान से बचाकर भलाई की तरफ
बाप दादा के दीन को छोड़कर
दीने मोहम्मदी की तरफ
लालच को छोड़कर सब्र की तरफ
झूठ से सच की तरफ
नाइंसाफी से इंसाफ की तरफ
और दुनिया की तंगी से दुनिया और आखिरत
दोनों की कुशादगी की तरफ

लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब
की तरफ़ से दलील आ चुकी है।
और हमने तुम्हारी तरफ
खुली रोशनी उतार दी है।
अब जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएं
और उसका दामन मजबूती से थाम लें।
अल्लाह उनको अपनी रहमत
और करम (के साए) में दाखिल करेगा
और राहे रास्त की तरफ उनको रहनुमाई करेगा।

निसा 4: 174-175

लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आ गई
यह वह चीज है जो दिलों के रोग का इलाज है
और ईमान लाने वालों के लिए रहनुमाई और रहमत है।

यूनुस 10: 57

प्रस्तावना

कुरआन आसमानी किताब है। इसके उतरने का मकसद इंसानों का मार्गदर्शन और हिदायत है। जो लोग इस पर ईमान लाए और इसे अपनी जिन्दगी का निशाने राह बनाकर चले उनको अल्लाह ने कामयाबी दी। इस किताब ने ऐसी क्रान्ति (इन्कलाब) को जन्म दिया जिसने दुनिया को बदल दिया। अरब के बाशिंदों को इस किताब ने एक नई पहचान दी, नई संस्कृति दी, नया ज्ञान दिया, नया विस्तार दिया, नया राज्य दिया, नई सोच दी। इस किताब को पढ़ने के बाद अरबों ने विज्ञान, राज्य व्यवस्था और आर्थिक व्यवस्था में नए कीर्तिमान स्थापित किए।

कुछ सदियों बाद ऐसे लोग आए जिन्होंने कुरआन पढ़ने के साथ समझना जरूरी न समझा। अरबी भाषा में बिना सोचे समझे कुरआन पढ़ना न सिर्फ तसलीम कर लिया गया बल्कि ऐसा करने से इत्मीनान करने का रिवाज भी आम हो गया। मुसलमानों की बड़ी तादाद ऐसी हो गई जिसे मालूम न था और न है, कि कुरआन में अल्लाह ने हमें क्या हुक्म दिया है। इसका नतीजा यह हुआ कि हम अंधकार में रह गए। ऐसे ही हालात पर डॉ. इकबाल ने कहा है-

वो जमाने में मोजिज थे मुसलमां होकर
और तुम ख्वार हुए तारिके कुरां होकर ।

और हाली ने भी कुछ ऐसा ही कहा:

पस्ती में कोई हमारा गिरना देखे
गिर कर हमारा न संभलना देखे ।

अब समय आ गया है कि लोगों को बताएं कि हमारी सब बीमारियों का इलाज है कुरआन का ज्ञान। कुरआन जीवन को कामयाब बनाने का कारगर नुस्खा है। इसमें कोइ शक नहीं कि कुरआन पढ़ने से हर अक्षर के बदले इनाम है। पर इस किताब के उतरने का मकसद यह है कि लोग इसे समझ कर पढ़ें, रहनुमाई हासिल करें और उस पर अमल करें।

इसमें जरा भी शक नहीं होना चाहिए कि यह अल्लाह की किताब है। यह हमारा ईमान और यकीन है। अल्लाह फरमाता है 'यह अल्लाह की किताब है, इसमें जरा शुबा (शक) नहीं, यह हिदायत है अल्लाह से डरने वालों के लिए। कुरआन का मकसद है 'इंसान को गुमराही से बचाना और हिदायत व कामयाबी से हम किनार करना।' यह हमें बाइज्जत जिंदगी गुजारने का तरीका देता है। कुरआन सीधी राह और हिदायत का सरचशमा (स्रोत) है। अल्लाह ने कुरआन को जो अलग अलग नाम दिए हैं वे अपने आप में हमें इस किताब से ताल्लुक और लगाव की दावत (निमंत्रण) देते हैं। अल्लाह फरमाता है:-

'यह हिदायत व खुशखबरी देने वाला है' 'यह हुक्म अल्लाह है।' 'फुरकान है।' 'बा बरकत है।' 'यह हर फैसले का मियार है।' यह हराम व हलाल में फर्क करने वाला है। यह खबरदार करने वाला है। यह गुमराही के बुरे नतीजे से खबरदार करने वाला है। 'यह किताब है जो हर विषय खोलखोल कर बयान करती है, इसे पढ़कर या सुनकर कोई भी शख्स समझ सकता है।' 'इसका अल्लाह की किताब होना जाहिर है।' इस किताब को अल्लाह ने उतारा है और इसके कलामे इलाही होने की दलीलें भी इसमें मौजूद हैं। इसकी भविष्यवाणी सच्ची साबित हुई है। कुरआन अल्लाह का मोजिजा (चमत्कार) है जो नबी (स.अ.व.) को दिया गया। 'यह किताब इंसान की फितरत (प्रकृति) के मुताबिक तालीम पेश करती है।' 'यह बरकत वाली किताब है।' 'यह अहले ईमान के लिए हिदायत है'। 'यह मरतबे वाली किताब है।' 'यह बेहतरीन कलाम है।' 'यह हिकमत (अक्लमंदी) से भरी किताब है।' 'यह सरासर हक (सच) है और हक के साथ ही उतारी गई है।'

जब अल्लाह तआला इस किताब की इतनी तारीफ करे तो फिर हमें इससे हिदायत

लेना जरूरी है। हम इस किताब के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं। हमें फिर से इसके साथ रिश्ता ठीक करना है। अल्लाह के अजाब से बचने की एक ही सूरत है कि हम कुरआन के अनुसार आचरण करें और इसके इनाम हासिल करें । अल्लाह खुद फरमाता है, 'यह ईमान लाने वालों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) और शिफा है।' इसकी पैरवी से इतने नफे (लाभ) हैं जिनकी कोई हद नहीं। अल्लाह ने इंसानों की हिदायत और नसीहत के लिए कुरआन को बड़ा आसान बना दिया है। यह किताब संस्कृति और सभ्यता के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। इसमें हमारे समाज को सही दिशा दिखाने का प्रोग्राम भी है तो हमारी आर्थिक व्यवस्था को बदलने का तरीका भी।

कुरआन का अर्थ है पढ़ना या तिलावत करना। कुरआन ईश्वरीय किताब है। यह अरबी ज़ुबान में अवतरित हुआ। यह सभी इंसानों के लिए है। यह एक याददहानी, एक नूर और एक चमत्कार है। अल्लाह ने क़ुरआन को हजरत मुहम्मद (स.अ.व.) पर 23 बरसों में उतारा । कुरआन रंग व नस्ल, स्थान और युग की हदों से ऊपर उठकर सभी इंसानों को संबोधित करता है। यह इंसानी जिंदगी के सभी पहलुओं – आध्यात्मिक (रूहानी), भौतिक (मादी), राजनीतिक, सामाजिक पारिवारिक और व्यक्तिगत में मार्गदर्शन करता है। कुरआन में राज्य के मुखिया के लिए भी नैतिक मूल्य मौजूद हैं तो एक आम आदमी के लिए भी । अमीर के लिए भी और गरीब के लिए भी। शांति के लिए भी और युद्ध के लिए भी । कुरआन आदमी के व्यक्तित्व को निखारता है ताकि एक आदर्श समाज बनाया जा सके । कुरआन के मुताबिक हर आदमी अपने कर्म के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह है और हर एक को एक दिन अपने कर्मों का हिसाब देना है ।

यह किताब धर्म की बुनियादी बातों और जिंदगी गुजारने के तरीके को खोलकर आसान तरीके से समझाती है। इसमें हमें अल्लाह और उसकी यकताई, उसकी ताकत, इंसान के अच्छे कर्मों का इनाम और बुरे कर्मों की सजा का सिद्धान्त, जिन्दगी बाद मौत की हकीकत, कियामत के दिन अल्लाह के सामने अपने किए का हिसाब और जन्नत और

दोजख़ के बारे में जानकारी मिलती है। यह इस बात पर भी जोर देता है कि इंसान अपनी जिम्मेदारियां पहचाने और उनके अनुसार आचरण करे। कुरआन इंसानी जिंदगी के लिए पूरा मार्गदर्शन है। कुरआन में कोई ऐसी बात नहीं जो अक्ल के ख़िलाफ हो। कुरआन का कोई भी आदेश नाइंसाफी पर आधारित नहीं है । कुरआन सच्चाई को बयां करने वाली और दिल और दिमाग पर अपना असर छोड़ने वाली किताब है। इसमें निशानियां हैं अल्लाह की ताकत की। यह निशानियां हमें याद दिलाती हैं इंसानी जिंदगी का मकसद। यह सफलता की कुंजी है। कुरआन एक सोने की खान की तरह है, जितना गहराई मे जाएंगे उतना कीमती सोना पाएंगे । इसे बार-बार पढें, सदा पढें, समझकर पढें और अपनी जिंदगी में रहनुमाई हासिल करें।

कुरआन को तर्जुमे (अनुवाद) की मदद से समझें । उसको समझने के लिए उलमा की मदद लें। तफसीर की मदद लें। कुरआन को समझने के लिए हदीस की मदद लें। समझने की कोशिश जरूर करें। वैसे तो अल्लाह ने इसे आसान बना दिया है। कुरआन में अल्लाह फरमाता है (चार बार)-

'हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान बना दिया है।'

अगर हम कुरआन को समझ कर पढ़ेंगे और उसके साए में जिंदगी गुजारेंगे तो हमें जिन्दगी में सुकून मिलेगा, बुरी बातों से दिल हट जाएगा और हमारी जिन्दगी पाकीजगी की तरफ आगे बढेगी, ईमान मजबूत होगा और अल्लाह की रहमत और इनाम की बारिश शुरू होगी। अल्लाह फरमाता है

जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएंगे और इसे मजबूती से पकड़े रहेंगे उन्हें अल्लाह अपनी रहमत और फजल व करम में दाखिल फरमाएगा और अपनी तरफ आने के सीधे रास्ते पर उन्हें लगा देगा।

(निसा 4: 175)

कुरआन बरकत वाली किताब है और सबसे बड़ी नेमत है। अल्लाह फरमाता है–

'यह रोशनी है तुम्हारे रब की तरफ से, हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो इसे कबूल कर ले। जब कुरआन तुम्हारे सामने पढ़ा जाए तो इसे गौर से सुनो और खामोश रहो, शायद की तुम पर भी रहमत हो जाए'।

(आराफ 7: 203- 204)

कुरआन हमारी जिन्दा किताब है। यह किताब हमारी रहनुमा है। यह हमारा स्कूल है, यह हमारा मदरसा है। इससे हम जिन्दगी के सबक सीखते हैं। मुसलमानों की तारीख को बनाने में कुरआने करीम का एक बहुत बड़ा रोल है। अल्लाह ने कुरआन उतारा ही इसलिए कि वह मिल्लत का जिन्दा और जावेद रहनुमा है। कुरआन में मुसलमानों को खुशखबरी दी गई कि अल्लाह उन्हें इंसानियत का लीडर बनाएगा बशर्ते वे अपनी जिन्दगी कुरआन के मुताबिक गुजारें। कुरआन सिर्फ पढ़ने के लिए ही नहीं है। वह तो नपा तुला विधान है जिन्दगी गुजारने का, सच्चाई पर कायम रहने का। यह बड़ा खजाना है तारीख (इतिहास) का, अक्लमंदी का, समझ का। इसकी वजह है अल्लाह जानता था कि उम्मते मुस्लिम के गिरोह उसी तरह के रास्ते से गुजरेंगे जिनसे बनी इस्राईल गुजर चुके हैं। इसलिए कुरआन ने बनी इस्राईल की कमजोरियों को, गलतियों को सबक हासिल करने के रूप में पेश किया है। हमें इससे सीख लेनी चाहिए। जो लोग बनी इस्राईल की पैरवी कर रहे हैं वे अपना चेहरा कुरआन के आईने में देख लें। कुरआन इस्लामी दावत की रूह (आत्मा) है। कुरआन इसका अस्तित्व है, कुरआन उसका जीवन है। कुरआन उसकी ढाल है, और कुरआन ही उसकी तलवार है। कुरआन उसका संदेश है। और कुरआन ही उसका जरिया है।

कुरआन एक जिन्दा उम्मत पर उतरा और उसने एक क्रान्ति (इंकलाब) पैदा कर दी। इतिहास गवाह है कि मदीने के थोड़े से लोगों ने इतिहास की धारा को ही बदल दिया। इतिहासकार लिखते हैं कि मदीने के लोगों की कामयाबी का राज था कि वे चलते फिरते

कुरआन थे। उनके लिए कुरआन फैसला करने वाली किताब थी।

अफसोस की बात है कि आज हम मुसलमान ही कुरआन पर कम भरोसा रखते हैं। आज हम अपने मामलात कुरआन के मुताबिक़ निपटाने में कतराते हैं। जजा और सजा और अल्लाह की इंसाफ पसंदी पर हमारा ईमान कमजोर हो गया है। मुसलमानों के लिए अपनी जिन्दगी में कुरआन के हुक्म को नजरअंदाज करना ईमान से दूर भागना है। अल्लाह फरमाता है–

'किसी मर्द और औरत के लिए इस बात की गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी मामले मे फैसला फरमा दे तो उनके लिए उनके मामले में कोई इख़्तियार हो'

(अहजाब 33: 36)

कुरआन की बातों पर शक करना ईमान की बहुत बड़ी कमजोरी है। इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है। क़ुरआन की हर बात सच्ची और अटल है। कुरआन पर कामिल ईमान लाना जरूरी है। हर मुसलमान पर लाजिम है कि कुरआन के हुक्म की पाबंदी करें।

हमारा कुरआन को भुला डालना वैसा ही है जिस तरह से पुरानी उम्मतों ने अपनी किताबों को भुला दिया था। अल्लाह फरमाता है:–

'अगर अहले किताब ईमान ले आते और ख़ुदातरसी (अल्लाह का डर और तकवा) इख़्तियार करते तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उनको नेमतों भरी जन्नत में दाखिल करते और अगर वे तौरात और इंजील और जो कुछ उनके रब की तरफ से उनकी तरफ उतारा गया है उसे कायम करते तो अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से अल्लाह की नेमतें पाते और खाते।'

(माइदा: 65 -66)

'और हमने तुम्हारे पास नूर भेजा है जो (हक को) वाजेह और रोशन करने वाला है।'

(निसा 4: 160)

कुरआन मजीद एक एसा नूर है, एक ऐसी रोशनी है जिसमें सच्चाई साफ दिखाई देती है। यह एक ऐसा नूर है जो अगर दिल में समा जाए तो अंधियारे छंट जाते हैं और जिंदगी रोशन हो जाती है। हक सामने नजर आता है।

रसूल अकरम (स.अ.व.) ने भी
कुरआन को समझने और उस पर अमल करने की नसीहत की हैं:-

1 मेरी उम्मत (मानने वालों का समुदाय) की सबसे अच्छी इबादत कुरआन मजीद पढ़ना है। क्योंकि यह दिल की सफाई का बेहतरीन और प्रभावशाली जरिया है।
2 अपने घरों को कुरआन की तिलावत (समझकर पढ़ना) और नमाज से रोशन रखो।
3 कुरआन मजीद की तिलावत करने वालों को आप (स.अ.व.) ने एक अक्षर (हरफ) के बदले दस नेकीयों की खुशखबरी सुनाई'। (तिरमिजी, दारमी)
4 जब तुममें से कोई चाहे कि अपने रब से बात करे तो चाहिए की कुरआन पढ़े। कुरआन पढ़ने और दान (खैरात) करने वाले शख्स के बराबर कोई नहीं।

(मुतफिक अलेह)

5 अल्लाह इस किताब के जरिये कुछ गिरोहों को (जो इसका हक अदा करेंगे, बुलन्द व सरफराज करेगा। और कुछ दूसरे गिरोह को (जो इसे इसके अधिकार से वंचित करेंगे) पस्ती में झोंक देगा।

(मुस्लिम)

6 'तुममें से बेहतर शख्स वह है जो कुरआन का इल्म (ज्ञान) हासिल करे और कुरआन का इल्म फैलाए ।

(बुखारी)

7 जिस आदमी के दिल में कुरआन का कोई हिस्सा न हो वह ऐसा है जैसे वीरान घर।

(तिरमिजी,दारमी)

8 'दिलों को भी इस तरह जंग लग जाता है, जिस तरह पानी से लोहे के जंग लग जाता है। लोगों ने पूछा 'ऐ अल्लाह के रसूल दिलों के जंग को दूर करने वाली चीज क्या है?' 'आप (स.अ.व.) ने फरमाया 'मौत को ज्यादा से ज्यादा याद करना और कुरआन मजीद पढ़ना। '

9 मेरी तरफ से पहुंचाओ भले ही एक ही आयत क्यों न हो।

10 'आने वाले समय में ऐसे लोग होंगे जो कुरआन पढ़ेंगे पर कुरआन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। वे लोग दीन से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है।

(बुखारी)

11 क्या मैं बताऊं कि बेहतर लोग कौन और बदतरीन लोग कौन हैं। बेहतर लोगों में से एक शख्स वह है जो अल्लाह की राह में सरगरम रहे, चाहे घोड़े की पुश्त पर या ऊँट की पीठ पर या प्यादा, यहाँ तक कि उसे मौत आ जाए, और बदतरीन लोगों में से वह शख्स है जो अल्लाह की किताब पढ़े और उसके किसी हिस्से से नसीहत न हासिल करे।

(सनन नसाई)

12 हजरत अली बिन अबु तालिब (रह.) फरमाते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह (स.अ.व.) को फरमाते सुना है कि 'थोड़े समय बाद कुछ फितने पैदा होंगे। मैंने जानना चाहा कि उनसे निकलने का रास्ता क्या है ?' आप (स.अ.व.) ने जवाब दिया 'किताब

अल्लाह, जिसमें तुमसे पहले के लोगों की खबर है, तुम्हारे आपस के झगड़ों का फैसला है, और जो दीवार की तरह मजबूत कथन है। हंसी मजाक नहीं। यह वह किताब है जिसे जोरावर ने भी इसे छोड़ा, अल्लाह ने उसकी कमर तोड़ दी और जिसने इसके अलावा और हिदायत तलब की, अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया । यह अल्लाह की मजबूत रस्सी है। यह अक्लमंदी की बात और सीधा रास्ता है। यह वह किताब है कि जिससे इच्छाओं (ख्वाहिशात) में बुराई पैदा नहीं होती । इससे जबान गंदी नहीं होती । न इसके अजायबात (चमत्कार) का सिलसिला खत्म होता है। यह किताब है जिसे जिनों ने अभी पूरा नहीं सुना था कि पुकार उठे 'बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना' (देखें सूरा अहकाफ 46: 30-31) यह वह किताब है कि जिसने इसके मुताबिक कहा, सच कहा, जिसने इसके तहत फैसला किया इंसाफ किया और जिसने इस पर अमल किया वह राहे रास्त पा गया ।

(तिरमिजी, दारमी)

नबी करीम (स.अ.व.) से हजरत हजीफा बिन यमान ने पूछा, 'क्या इस वक्त हम जिस खैर से हम किनार (जुड़े हुए) हैं उसके बाद कोई शर (बुराई) आने वाला है ? जिससे हमें बचना है? आप (स.अ.व.) ने जवाब दिया,'ऐ हजीफा तू किताब अल्लाह को मजबूती से थामे रख इसका इल्म हासिल कर और जो कुछ इसमें है उसकी पैरवी इख्तियार कर। आपने यह बात तीन बार दोहराई। मैंने कहा 'जी हाँ' (हाकिम)

13 अल्लाह की किताब ही वह रस्सी है जो आसमान से जमीन तक दराज है।

14 तुम्हें खुशखबर हो कि इस कुरआन का एक सिरा अल्लाह के हाथ में है और दूसरा सिरा तुम्हारे हाथों में है। इसलिए इसे मजबूती से पकड़ लो क्योंकि इसके बाद तुम कभी हलाक और गुमराह न होंगे।

(इब्ने जरीर)

कुरआन मजीद कयामत के दिन तुम्हारे हक में गवाही देगा या फिर तुम्हारे खिलाफ गवाही देगा।

(मुस्लिम)

अल्लाह तआला इस कुरआन के जरिए कुछ लोगों को बुलंदी अता करता है और कुछ लोगों को जिल्लत और पस्ती में धकेल देता है।

(मुस्लिम)

मैं तुम्हारे दरमियान दो चीजें छोड़े जा रहा हूं। तुम हरगिज न भटकोगे जब तक इन दोनों को मजबूती से पकड़े रहोगे- अल्लाह की किताब और रसूल की सुन्नत।

(मौता)

कुरआन का माहिर, कुरआन को लिखने वाला मोजिज और पाकीजा फरिश्तों के साथ होगा। और जो शख्स कुरआन को अटक-अटक कर और बड़ी मुश्किल से पढ़ता है उसके लिए दोहरा अज्र (बदला) है।

(मुस्लिम)

कुरआन की तिलावत करो ताकि कुरआन जिसके लिए मना करता है तुम उससे रुक सको। अगर कुरआन तुम्हें इस काबिल ना बनाए कि तुम रुक जाओ तो तुमने सच्चे मायनों में तिलावत नहीं की।

(तिबरानी)

वो कुरआन का सच्चा मानने वाला नहीं है जो कुरआन के हराम किए हुए को हलाल समझता है।

(तिरमिजी)

कुरआन की अजमत (महानता) और अफादियत (फायदेमन्द होना) हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रह.) के इस कथन से साफ झलकती है, 'अगर मुझसे ऊंट की रस्सी भी

गायब हो जाए तो अल्लाह की किताब में उसे ढूंढ़ निकालूं'।

इसी तरह हजरत उमर (रजि.) ने भी कहा था:

'तुम कुरआन पढ़ने वालों को देखकर धोखा न खाओ, क्योंकि ये तो बस कलाम है जिसे हम बोलते हैं। अलबत्ता यह देखो कि कौन इस पर अमल कर रहा है।'

अल्लामा इब्ने कय्यम फरमाते है:

हमारे किसी सलफ का कोल (कथन) है कि कुरआन इसलिए नाजिल हुआ था कि उस पर अमल किया जाए। मगर लोगों ने इसके पढ़ने को ही अमल करना मान लिया। हामिले कुरआन तो वे हैं जो इसका ज्ञान रखते हैं, उसके हुक्म पर अमल करते हैं। भले ही कुरआन उन्हें कंठस्थ न हो। और जिन लोगों ने कुरआन कंठस्थ कर रखा है लेकिन न तो समझते हों और न उस पर अमल करते हों वे हामिले कुरआन नहीं हैं। भले ही वे इस के हुरूफ(अक्षर) तीरों की तरह सीधा करके सही सही अदा कर लें।

(जाआ दुल मिआद 1 पेज- 238)

कुरआन अपने पढ़ने के लिए शब्द तिलावत का इस्तेमाल करता है। तिलावत का अर्थ है पीछा करना, पीछे-पीछे चलना, पैरवी करना, उस पर अमल करना। इसका अर्थ यह है कि बिना समझे पढ़ लेने से कुरआन की तिलावत का हक अदा नहीं होगा, बल्कि समझकर पढ़ना होगा।

जो लोग कुरआन के हुक्म जानने के बाद भी उस पर अमल नहीं करते हैं, उनके बारे में कुरआन ने कहा है- वे उस गधे की तरह है जिस पर किताबों का बोझ लदा है मगर गधा होने की वजह से उस पर लदी किताबों को नहीं समझ सकता।

जिन ईमान लाने वालों ने अपनी असली जिंदगी से कुरआन को खारिज कर दिया है, ऐसे तारीके कुरआन के बारे में नबी ए करीम स.अ.व. कल कयामत के दिन अल्लाह के हुजूर शिकायत करेंगे-

(क़ुरआन की ज़ुबानी)– ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक मेरी उम्मत ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। फ़ुरक़ानः 30

इमाम गजाली (रह.) का बयान है कि अल्लाह ने क़ुरआन की अज़मत और जमाल को हरफ़ों का लिबास पहना दिया है, ताकि इस लिबास के ज़रिए वह इंसानों तक पहुँचे लेकिन बहुत से लोग क़ुरआने हकीम को इसकी आवाज़ और ज़ाहिरी शक्ल व सूरत से ज़्यादा कुछ नहीं समझते।

इमाम गजाली (रह.) ने **फरमाया**–

सारी रात क़ुरआन मजीद की तिलावत करने से ज़्यादा सवाब उसमें है कि एक-दो आयत ही मायने और मतलब समझकर पढ़ें।

मौलाना मौदूदी ने लिखा है–

क़ुरआन मजीद इंसानों के लिए अल्लाह का बनाया हुआ जीवन नियम है। मगर अफसोस! हम इसके गहरे अध्ययन से कतराते हैं। इसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे हमारा कोई संबंधी बहुत दिनों से कहीं दूर चला गया हो और हम इसकी खैर खबर जानने के लिए बेचैन हों। उसका हमें खत मिलता है मगर वह ऐसी ज़बान में लिखा है जिसे हम पढ़ नहीं सकते। अब हम उस खत में लिखी बात को जानने के लिए कितने बेचैन होंगे! लेकिन बदकिस्मती से हम अल्लाह के खत यानी क़ुरआन मजीद को समझकर पढ़ने के लिए बेताब नहीं है जिसमें हमारी ज़िंदगी, दुनिया और आखिरत की कामयाबी की चाबी है। क़ुरआन की बातों को समझना और याद रखना बहुत ज़रूरी है। अल्लाह फरमाता है– और (हां) जो मेरी याद से रूगरदानी करेगा उसकी ज़िंदगी तंगी में रहेगी। और हम उसे कयामत के दिन अंधा करके उठाएंगे। वो कहेगा, ऐ मेरे रब तूने मुझे अंधा करके क्यों उठाया? हालांकि मैं तो देखता भालता था। (जवाब मिलेगा कि) ऐसा ही होना चाहिए था। तू मेरी आई हुई आयतों को भूल गया। तो आज तू भी भुला दिया गया।

ताहा 20:124-126

शेखुल हिंद मौलाना महमूदुल हसन ने फरमाया–

'मैंने जहां तक जेल की तन्हाइयों में इस पर गौर किया कि पूरी दुनिया में आज मुसलमान दीनी और दुनियावी ऐतबार से क्यों तबाह हो रहे हैं, तो मेरी समझ में इसके दो कारण आते हैं–एक तो मुसलमानों का कुरआन मजीद छोड़ देना और दूसरा आपस के मतभेद और झगड़े।' इसलिए जरूरी है कि हम कुरआन मजीद को अपनाएं और उसकी नसीहतों को आम लोगों में फैलाएं।

कुरआन की चंद चुनीदा आयतें इस संकलन में पेश हैं। इस किताब में मैंने कुरआन की आयतें मौलाना मौदूदी की तफ्हीमुल कुरआन, मौलाना फतेह मुहम्मद खां और मौलाना मुहम्मद जूनागढी का उर्दू तर्जुमा, मौलाना मुहम्मद फारूक खां व डॉ मुहम्मद अहमद का सुगम हिन्दी अनुवाद और हामिद हुसैन का फीजलालुल कुरआन से ली हैं। जिस अनुदित कुरआन में सीधी सहज बात लगी मैंने उसमें से आयत ले ली। मैं इन सब बुजुर्गों का आभारी हूँ और अल्लाह से दुआ है कि इसका अज्र भी इन्हीं बुजुर्गों के खाते में जाए।

हमें उम्मीद है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कुछ लोग इस पर अमल करके अल्लाह के फरमाबरदार बन्दे बनने की कोशिश करेंगे और शराफत, अजमत, उरूज व कामयाबी हासिल करेंगे। हो सकता है कि कहीं कोई गलती और भूल हो गई हो। आप से गुजारिश है कि आपकी नजर में कोई गलती मिले तो जरूर बताएं ताकि आगे उसमें सुधार किया जा सके। अल्लाह से दुआ है कि मेरे इस छोटे से काम को कबूल फरमाए।

आमीन।

डॉ. अब्दुल रजाक सलीमुद्दीन खान
drabdulrazaqkhan@gmail.com
जयपुर
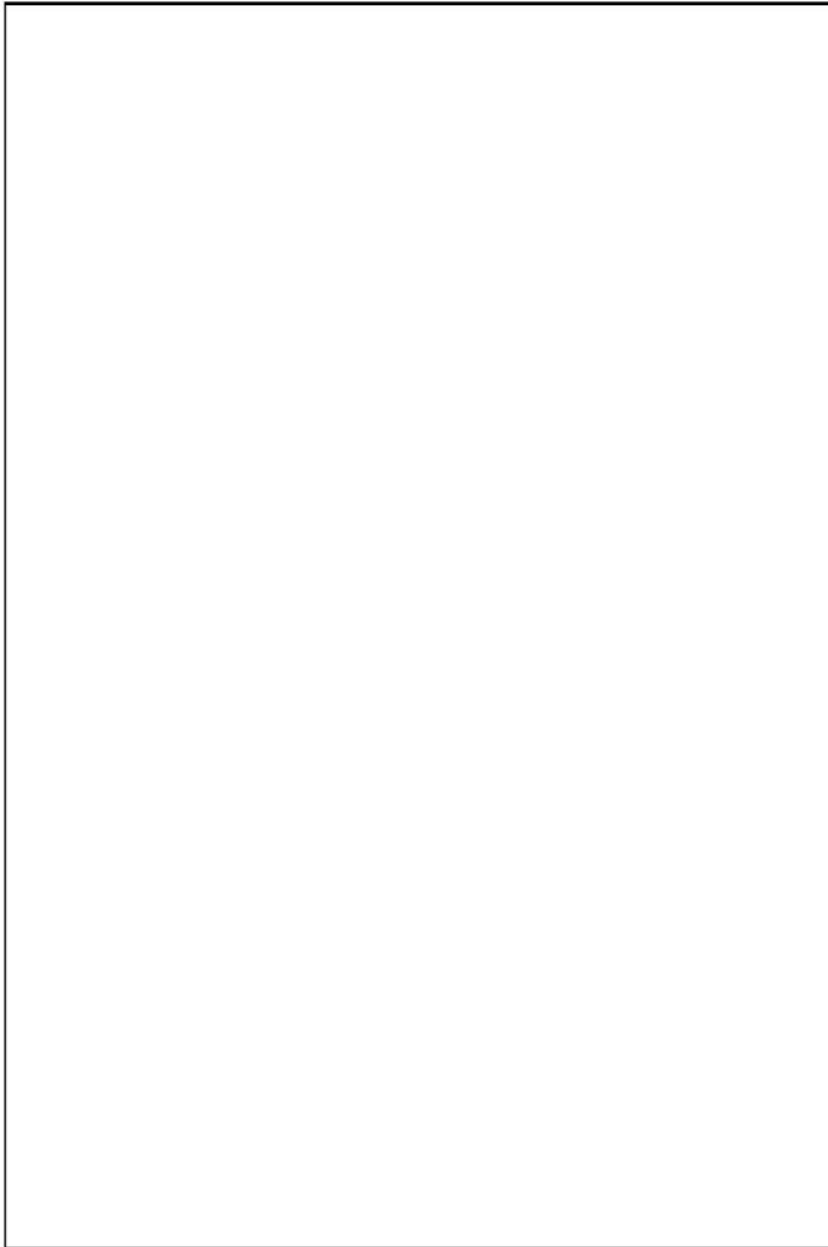
सबक -1

कुरआन, कुरआन की जुबानी

अलफातिहा

अल्लाह के नाम से जो बेइंतेहा मेहरबान और रहम करने वाला है।

तारीफ अल्लाह ही के लिए है जो तमाम

कायनात (जहानों) का रब है। निहायत मेहरबान

और रहम फरमाने वाला है । रोजे जजा

(इंसाफ का दिन) का मालिक है । हम तेरी ही

इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं ।

हमें सीधा रास्ता दिखा, उन लोगों का रास्ता

जिन पर तूने इनाम फरमाया,जो मातूब

(जिन पर गजब किया गया) नहीं हुए, जो

भटके हुए नहीं हैं ।

'आमीन' (कबूल फरमा)

पहली वही-

पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया।
पैदा किया इंसान को जमे हुए खून की फुटकी से ।
पढ़ो ! तुम्हारा रब सब से ज्यादा करीम है !
जिसने इल्म बख्शा कलम से ।
इल्म बख्शा इंसान को जो वह न जानता था।

सूरह अलक 96: 1- 5

दूसरी वही-

ऐ ओढ़ लपेट कर लेटने वाले ।
उठो और खबरदार करो ।
और अपने परवरदिगार की बड़ाई का ऐलान करो ।
और अपने कपड़े पाक रखो ।
और गंदगी से दूर रहो ।
और एहसान न करो ज्यादा हासिल करने के लिए ।
और अपने रब की खातिर सब्र करो ।

मुदस्सर 74: 1 - 7

यह अल्लाह की किताब है
इसमें कोइ शक नहीं ।
हिदायत है उन परहेजगार लोगों के लिए
जो गैब (छिपी हुई बातों) पर ईमान लाते हैं ।
नमाज कायम करते हैं ।
जो रिज्क (धन-दौलत, सामान) हमने उनको दिया है
उसमें से खर्च करते हैं।
और जो किताब (कुरआन) तुम पर नाजिल (उतारी) की गई
और जो किताबें तुमसे पहले नाजिल की गई थीं
उन सब पर ईमान (मजबूत यकीन, विश्वास) लाते हैं ।
और आखिरत (मरने के बाद कयामत के दिन

हिसाब के लिए उठाया जाना) पर यकीन रखते हैं ।
वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और वही कामयाबी पाने वाले हैं।

बकर 2: 2 - 5

हक़ीक़त यह है कि कुरआन वह रास्ता दिखाता है,
जो बिल्कुल सीधा है।
जो लोग इसे मानकर भले काम करने लगे,
उन्हें खुश खबर देता है
कि उनके लिए बड़ा अज्र (बदले में इनाम) है ।
और जो लोग आखिरत को न माने
उन्हें यह खबर देता है कि उनके लिए
हमने दर्दनाक (दुख भरा) अजाब तैयार कर रखा है ।

बनी इस्राईल 17: 9-10

और ऐलान कर दो कि हक़ (सच) आ गया
और बातिल (झूट) मिट गया,
बातिल तो मिटने ही वाला है ।
हम इस कुरआन के सिलसिले में
वह कुछ नाज़िल (उतार) कर रहे हैं
जो मानने वालों के लिए तो शिफा और रहमत हैं
मगर जालिमों के लिए खसारे (घाटे) के सिवाय
किसी चीज में इजाफा (बढ़ोतरी) नहीं करता

- बनी इस्राईल 17: 81-82

हमने इस (कुरआन) को शबे कद्र में नाजिल किया (उतारा) और तुम क्या जानो कि शबे कद्र क्या है? शबे कद्र हजार महीनों से ज्यादा बेहतर है।
फरिश्ते और रूह (जिब्राइल) इस रात में अपने रब के आदेश से हर हुक्म लेकर उतरते हैं। वह रात सरासर सलामती है तुलुअ फज्र तक।

- कद्र 97: 1-5

जब कुरआन तुम्हारे सामने पढ़ा जाए,
तो उसे तवज्जोह (ध्यान) से सुनो,
और खामोश रहो,
शायद कि तुम पर रहमत हो जाए।

- आराफ 7: 204

और इसी तरह यह किताब हमने उतारी है एक बरकत वाली किताब,
पस तुम उसकी पैरवी करो,
और तकवे (अल्लाह से डर कर परहेजगारी)
की रविश (तरीका) अपनाओ (इख्तियार करो)
दूर नहीं कि तुम पर रहम (दया) किया जाए।

अनआम 6 : 155

काश उन्होंने तौरात, इंजील और उन दूसरी किताबों
को कायम किया होता जो उनके रब की तरफ से उनके पास
भेजी गई थीं। ऐसा करते तो उनके लिए ऊपर से रिज्क बरसता और नीचे से निकलता।

मायदा 5: 66

और फरमाया (अल्लाह ने) - तुम दोनों (यानी इंसान और शैतान) यहां (जन्नत) से उतर जाओ। और तुम एक दूसरे के दुश्मन रहोगे। अब अगर मेरी तरफ से तुम्हें कोई हिदायत पहुँचे तो जो कोई इस हिदायत की पैरवी करे वह न भटकेगा न बदबख्ती में मुब्तिला होगा। और जो मेरे जिक्र से मुंह मोड़ेगा उसके लिए दुनिया में तंग जिन्दगी होगी और कयामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा 'परवरदिगार दुनिया में तो मैं आंखों वाला था, यहां मुझे अंधा क्यो उठाया ?' अल्लाह फरमाएगा, 'इसी तरह तू हमारी आयात को जबकि वह तेरे पास आई थीं, तूने भूला दिया था। उसी तरह आज तू भूलाया जा रहा है। इस तरह हम हद से गुजरने वाले और अपने रब की आयात न मानने वाले को (दुनिया) में बदला देते हैं और आखिरत का अजाब ज्यादा सख्त और ज्यादा देर रहने वाला है।'

ताहा 20: 123-127

सबक - 2

अल्लाह

कहो, वो अल्लाह है यकता (एक ही है)।
अल्लाह सबसे बेनियाज (वह किसी का मोहताज नही,
जो बालातर है, जो लाजवाब हो, जो कामिल हो
ऐसे गुणों में सबसे ऊँचा)है
सब उसके मोहताज हैं ।
न उसकी कोई औलाद है
न वह किसी की औलाद।
और कोई उसका हमसर (मानिंद,
रुतबे में बराबर) नहीं है ।

इखलास 112: 1-4

अल्लाह वह जिंदा ए जावेद (हमेशा रहने वाला) हस्ती,
जो तमाम कायनात को संभाले हुए है ।
उसके सिवाय कोई पूजने (इबादत) के लायक नहीं है,
वह न सोता है,
और न उसे ऊंघ आती है ।
जमीन और आसमानों में जो कुछ हैं
उसी का है ।
कौन है जो उसकी जनाब में उसकी इजाजत के बगेर सिफारिश कर सके ।

जो कुछ बंदों के सामने है, उसे भी वह जानता है
और जो कुछ ओझल है उससे भी वह वाकिफ(जानकार) है ।

और उसकी मालूमात में से कोई चीज उनके काबू में
नहीं आ सकती अलावा कि किसी चीज का
इल्म (ज्ञान) वह खुद ही उनको देना चाहे,
उसकी हुकूमत आसमानों और जमीन पर छाई हुई है
और उसकी निगहबानी उसके लिए कोइ थका देने वाला काम नहीं है ।
बस वही एक बुजुर्ग व बरतर हस्ती है ।

बकर 2: 255

दाने और गुठली को फाड़ने वाला अल्लाह है
वही जिंदा को मुर्दा से निकालता है।
और वही मुर्दा को जिंदा से खारिज करने वाला है ।
ये सारे काम करने वाला अल्लाह है ।
फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो?
रात का परदा चाक करके वही सुबह निकालता है ।
उसी ने रात को सुकून का वक्त बनाया है ।
उसी ने चांद और सूरज के तुलूअ (उगने) और
गुरूब (छिपने) का हिसाब मुकर्रर (तय) किया है ।
ये सब उसी जबरदस्त कुदरत (ताकत) और इल्म रखने वाले के ठहराए हुए अंदाजे हैं।
और वही है जिसने तुम्हारे लिऐ तारों को सहरा, जंगल और समन्दर के अंधेरों में रास्ता मालूम करने का जरिया बनाया है।
देखो हमने निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं
उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं।
और वही है जिसने एक जान से तुमको पैदा किया
फिर हर एक के लिए ठहरने की जगह है।
और एक उसको सौंपे (मिट्टी में) जाने की,
ये निशानियां हमने वाजेह (खोलकर बता दी) कर दी हैं।
उन लोगों के लिए जो समझबूझ रखते हैं।
और वही तो है जिसने आसमान से पानी बरसाया।
फिर उसके जरिए से हर किस्म की हरियाली उगायी ।

फिर उससे हरे भरे खेत और पेड़ पैदा किए।
फिर उन पर तह पर तह चढ़े दाने निकाले।
और खजूर के शगूफ़ों से फलों के गुच्छे के गुच्छे पैदा किए ।
जो बोझ के मारे झुक पड़ते हैं।
और अंगूर, जैतून और अनार के बाग लगाए।
जिनके फल एक दूसरे से मिलते जुलते हैं
और फिर हर एक की खासियत (गुण) अलग -अलग भी है।
ये दरख्त जब फलते हैं तो उनमें फल आने
और फिर उनके पकने की कैफियत पर जरा गौर करो,
उन चीजों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

इस पर भी लोगों ने जिनों को अल्लाह का शरीक ठहरा दिया,
हालांकि वह उनका खालिक (पैदा करने वाला) है।
और जानबूझकर उसके लिए बेटे और बेटियां बना दी,
हालांकि वह पाक है, बालातर (ऊपर) है उन बातों से जो ये लोग कहते हैं।
वह तो आसमान और जमीन को बनाने वाला है।
उसका कोइ बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसका जीवनसाथी ही नहीं है।
उसने हर चीज को पैदा किया है ।
और वह हर चीज का इल्म रखता है।
यह है अल्लाह तुम्हारा रब।
कोइ उसके सिवाय पूजने लायक नहीं है ।
वह हर चीज को पैदा करने वाला है।
इसलिए तुम उसकी बंदगी (वंदना, पूजा) करो।
वह हर चीज का निगरां (कारसाज) है।
निगाहें उसको नहीं पा सकती
और वह निगाहों को पा लेता है।
और वही बड़ा बारीक बीं (सूक्ष्मदर्शी) बा खबर है।

अनआम 6: 95-103

कहो- या अल्लाह ! मुल्क के मालिक !
तू जिसे चाहे हुकूमत दे
और जिससे चाहे छीन ले ।

जिसे चाहे इज्जत बख्शे
और जिसे चाहे ज़लील कर दे।
भलाई तेरे ही हाथ में है।
और बेशक तू हर चीज पर कादिर है।
रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है
और दिन को रात में ।
बेजान में से जानदार को निकालता है
और जानदार में से बेजान को
और जिसे चाहता है बेहिसाब
रिज्क दे देता है।

आले इमरान 3: 26-27

अल्लाह नूर (प्रकाश, रोशनी) है आसमानों और जमीन का,
उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक
जिसमें चिराग (दीप)हो,
और चिराग शीशे (कांच) के गोले में रखा हो
और शीशा चमकते हुए तारे की तरह हो,
वह चिराग एक बाबरकत (मुबारक) दरख्त जैतून के तेल से जलाया जाता हो,
जो दरख्त न पूर्वी न पश्चिमी (किसी ऊंची और खुली रोशन जगह लगा) हो,
करीब है कि वह तेल अपने आप ही रोशनी देने लगे अगर चे आग उसे न छुए।
(इस तरह) नूर पर नूर है। (रोशनी पर रोशनी)
अल्लाह अपने नूर (रोशनी) की तरफ रास्ता दिखाता है जिसे चाहे,
लोगों को (समझाने के लिए) ये मिसालें अल्लाह बयान फरमा रहा है।
और अल्लाह हर चीज के हाल को अच्छी तरह जानता है।
(उसके नूर की तरफ हिदायत पाने वाले) उन घरों मे पाए जाते हैं,
जिन्हें बुलन्द करने का और जिनमें अपने नाम को
जपने का अल्लाह ने हुक्म दिया है
वहां सुबह शाम अल्लाह की तसबीह (जप, नमाज आदि) बयान करते हैं।
ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और खरीदना-बेचना
अल्लाह की याद से और नमाज कायम करने
और जकात अदा करने से गाफिल (लापरवाह) नहीं करते।
उस दिन (कयामत) से डरते हैं।
जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें पथरा जाएंगी।

वह सब कुछ इसलिए करते हैं ताकि अल्लाह उनके बेहतरीन आमाल (बेहतर कर्म) का बदला उनको दे,
बल्कि अपने फजल (मेहरबानी) से और ज्यादा दे,
अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क (धन) देता है।
और काफिरों (इनकार करने वालों) के आमाल (कर्म) की
मिसाल ऐसी है जैसे चटियल मैदान में रेत,
जिसे प्यासा आदमी दूर से पानी समझता है
लेकिन जब उसके पास पहुंचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता है, बल्कि वहां उसने अल्लाह को पाया, जो उसका हिसाब पूरा पूरा चुका देता है,
अल्लाह बहुत जल्द हिसाब कर देने वाला है।

या फिर उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक गहरे समन्दर में अंधेरे के ऊपर एक मोज (लहर) छाई हुई है,उस पर एक और मौज
और उसके ऊपर बादल, अंधेरे पर अंधेरा चढ़ा है।
आदमी अपना हाथ निकाले तो उसको देखने न पाए।
जिसे अल्लाह रोशनी (हिदायत) न बख्शे
उसके लिए फिर कोई नूर (हिदायत) नहीं।
क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह की तसबीह कर रहे हैं,
वे सब जो आसमानों और जमीन में हैं,
और वो परिन्दे जो पंख फैलाए उड़ रहे हैं।
हर एक अपनी नमाज और तसबीह का तरीका जानता है,
और ये सब कुछ जो करते हैं अल्लाह उससे बाखबर रहता है।

आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है
और उसकी तरफ सबको पलटना (लौटना) है।

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह बादल को धीरे-धीरे चलाता है,
फिर उसके टुकड़ों को एक दूसरे के साथ जोड़ता है,
फिर उसे समेटकर बादलों की तह बा तह बना देता है
फिर तुम देखते हो कि उसके खोल में से बारिश की बूंदें टपकती चली आती हैं
और वह आसमान से उन पहाडों जैसे बुलन्द बादलों से ओले बरसाता है,
फिर जिसे चाहता है उसे नुकसान पहुंचता है
और जिसे चाहता है बचा लेता है।
उसकी बिजली की चमक ऐसी होती है कि आँखों की रोशनी चली।

अल्लाह ही रात और दिन का उलट फेर कर रहा है
उसमें एक सबक (पाठ) है आँखों वालों के लिए।

और अल्लाह ने हर जानदार को एक तरह के पानी से पैदा किया।
कोइ पेट के बल चल रहा है तो कोई दो टांगो पर, और कोई चार टांगो पर ।
जो कुछ चाहता है वह पैदा करता है ।
वह हर चीज पर कादिर (समर्थ) है।

नूर 24: 35-45

वह अल्लाह ही है जिसके सिवाय कोई माबूद (पूजा के लायक) नहीं ।
गायब और जाहिर हर चीज का जानने वाला
वही रहमान और रहीम है।
वह अल्लाह ही है जिसके सिवाय कोई माबूद नहीं।
वह बादशाह है, मुकद्दस (पाक जात)
सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, सब पर गालिब
अपना हुक्म ताकत के साथ लागू करने वाला और सदा बड़ा ही होकर रहने वाला,
पाक है अल्लाह उस शिर्क से जो लोग कर रहे हैं।
वह अल्लाह ही है जो तख़लीक (पैदा करना)
की योजना बनाने वाला और उसको लागू करने वाला है।
उसके लिए सबसे अच्छे नाम हैं।
हर चीज जो आसमानों और जमीन में है उसी की तसबीह कर रही है ।
और वह जबरदस्त और हकीम (तत्वदर्शी) है ।

हश्र 59: 22-24

कभी ऐसा नहीं होता कि तीन आदमी कानाफूसी कर रहे हों
और उनके बीच में चौथा अल्लाह न हो, या पांच आदमियों में कानाफूसी हो और उनके अंदर छठा अल्लाह न हो। खुफिया बात करने वाले भले इससे कम
हैं या ज्यादा जहां कहीं भी हो अल्लाह उनके साथ होता
है। फिर कयामत के दिन वह उनको बता देगा कि उन्होंने
क्या कुछ किया है। अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है।

मुजादला 58: 7

सबक़-3

पैगम्बर व रसूल

हमने हर उम्मत (क़ौम, गिरोह, समाज) में रसूल भेजा।
और उनके ज़रिए से सबको खबरदार कर दिया
कि अल्लाह की बंदगी (वंदना) करो
और तागूत की बंदगी से बचो।
(तागूत-देवता और नेता जो इंसान और ईश्वर के बीच में खड़े होकर इंसान को बुराई की तरफ ले जाए -शैतान और बुराई की शक्तियां)

नहल 16: 36

शुरु में सब लोग एक ही तरीके पर थे ।
(फिर हालत बाकी न रही और विभिन्न मत पैदा हो गए)
तब अल्लाह ने नबी भेजे जो सच्चाई पर खुशखबर
देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गए
और उनके साथ सच्ची किताबें उतारी
ताकि सच के बारे में लोगों के दरमियान जो विभिन्न मत हैं उनका फैसला करे। मतभेद उन लोगों ने किया जिन्हें सच का ज्ञान दिया जा चुका था।
उन्होंने रोशन (साफ-साफ दिखने वाली) हिदायत
के बाद सच को सिर्फ इसलिए छोड़ दिया ताकि अलग अलग तरीके

निकालें क्योंकि वे आपस मे ज्यादती करना चाहते थे।
पस जो पैगम्बरों पर ईमान (विश्वास) ले आए
उन्हें अल्लाह ने अपने हुक्म से
उस सच्चाई का रास्ता दिखाया जिसमें
लोगों ने मतभेद किया था।
अल्लाह जिसे चाहता है सच्चा रास्ता दिखा देता है।

बकर 2: 213

उनके रसूलों ने उनसे कहा-वाकई हम कुछ नहीं है मगर तुम्हीं जैसे इंसान,
लेकिन अल्लाह अपने बंदो में से जिसको चाहता है नवाजता है।

इब्राहीम 14: 11

जिसने रसूल (स.अ.व.) की इताअत (फरमाबरदारी) की
उसने दरअसल अल्लाह की इताअत की।

निसा 4: 80

जो कुछ रसूल (स.अ.व.) तुम्हें दे वो ले लो
और जिस चीज से तुम्हें रोक दे रुक जाओ।
अल्लाह से डरो, अल्लाह सख्त सजा देने वाला है।

हश्र 59: 7

ऐ मोहम्मद (स.अ.व.), तुम्हारे रब की कसम ये कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक अपने आपसी मतभेद में ये तुमको फैसला करने वाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फैसला करो उस पर अपने दिलों में भी कोई तंगी महसूस न करें, बल्कि सर झुका दे (यानी दिल से मंजूर कर लें)

निसा 4: 65

मुसलमानों कहो: हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस हिदायत पर जो हमारी तरफ नाजिल (उतरी) हुई है और जो इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक, याकूब और याकूब की औलाद की तरफ नाजिल हुई थी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे पैगम्बरों को उनके रब की तरफ से दी गई थी। हम उनके दरमियान कोई फर्क नहीं करते। और हम अल्लाह

के फरमाबरदार हैं।

बकर 2: 136

और हमने जिस रसूल को भी भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म के तहत उसकी इताअत (उसके कहने के मुताबिक काम करना) की जाए ।

निसा 4: 64

अलीफ लाम रा -एक सूरह है, यह हमने आपकी तरफ उतारी है ताकि आप लोगों को अलग-अलग तरह के अँधेरों से निकालकर रोशनी में लाएं, उनके परवरदिगार के हुक्म से, जबरदस्त और तारीफ वाले अल्लाह की तरफ।

और हमने आपकी तरफ यह जिक्र (कुरआन) नाजिल किया है ताकि आप लोगों को वह तालीम (शिक्षा) खोल-खोल कर समझा दें जो उनके लिए नाजिल की गई है और ताकि वो लोग खुद भी सोचें और समझें ।

नहल 16: 44

और हमने आप (स.अ.व.) को तमाम आलम के लिए रहमत ही बनाकर भेजा है।

अम्बिया 21: 107

बेशक अल्लाह के रसूल की जिंदगी तुम्हारे लिए पैरवी का बेहतरीन नमूना है।

अहजाब 33: 21

ईमानवालो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और हुक्म सुनने के बाद उसकी रूगरदानी (अवज्ञा) न करो ।

अनफाल 8: 20

ऐ रसूल। लोगों से कह दीजिए, अगर तुम सच में अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह तुम्हें अपना प्रिय बनाएगा। तुम्हारी गलतियां माफ कर देगा। और अल्लाह बहुत ही माफ करने वाला है और बड़ा ही मेहरबान है।

आले इमरान 3: 31

नबी मुसलमानों के लिए अपनी जानों से बढ़कर है।

अहज़ाब 33: 6

और (देखो) किसी मोमिन मर्द और औरत को अल्लाह और उसके रसूल (स.अ.व.) के फैसले के बाद अपने किसी मामले में कोइ इख्तियार बाकी नहीं रहता। (याद रखो) अल्लाह और उसके रसूल की जो भी नाफरमानी करेगा वह साफ गुमराही में पड़ेगा।

अहज़ाब 33: 36

पस जो लोग इस रसूल पर ईमान ले आएं, उसकी मदद और हिमायत करें और उस रोशनी की पैरवी करें जो उनके साथ उतारी गई है। वही लोग कामयाबी पाने वाले हैं।

आराफ 7:157

और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह ने इनाम फरमाया है। यानी अम्बिया (पैगम्बरों), सिद्दीकीन (सच्चे लोग) और शहीदों और सालेहीन (नेक काम करने वाले)। और क्या ही खूब है उन लोगों की संगत, यह है वास्तविक (सच्चा, हकीकत) इनाम (फजल) जो अल्लाह की तरफ से मिलता है और हालांकि सच्चाई जानने के लिए अल्लाह का इल्म (ज्ञान) काफी है।

निसा 4: 69-70

हमने आपको तमाम इन्सानों के लिए बशारत (खुशखबर) देने वाला और होशियार करने वाला बनाकर भेजा है।

सबा 34:28

मोहम्मद (स.अ.व.) तुममें से किसी के बाप नहीं है। वो तो अल्लाह के रसूल और आखरी नबी हैं।

अहज़ाब 33: 40

हमने अपने रसूल को खुली (वाजेह) निशानियाँ देकर भेजा और उनके साथ कुरआन (मार्ग दिखाने वाली किताब) मीजाने अदल (इंसाफ की तराज़ू) उतारी ताकि लोग इंसाफ पर कायम हों।

हदीद 57: 25

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत (कुरआन) और दीने हक (सच्चा दीन) के

साथ भेजा, ताकि वह उसको जीवन की तमाम व्यवस्था (निज़ाम) पर ग़ालिब कर दे।

फतह 48: 28

अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी (स.अ.व.) पर दुरूद भेजते हैं ऐ लोगो जो ईमान ले आए हो तुम भी उन पर दुरूद व सलाम भेजो ।

अहज़ाब 33: 56

तुम नेकियों का हुक्म देते हो और बुराइयों से रोकते हो।

आले इमरान 3: 110

ऐ नबी ! हमने आपको हक़ की गवाही देने वाला, नेकी पर ख़ुशख़बरी देने वाला और बुराई के बुरे परिणाम (अंजाम) से डराने वाला और अल्लाह की तौफ़ीक़ (प्रेरणा) और हुक्म से अल्लाह की तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग़ (दीप) बनाकर भेजा है।

अहज़ाब 33: 44-45

और हमने आपको तमाम आलम (जगत) के लिए रहमत बनाकर भेजा है।

अंबिया 21: 107

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की ।

निसा 4: 80
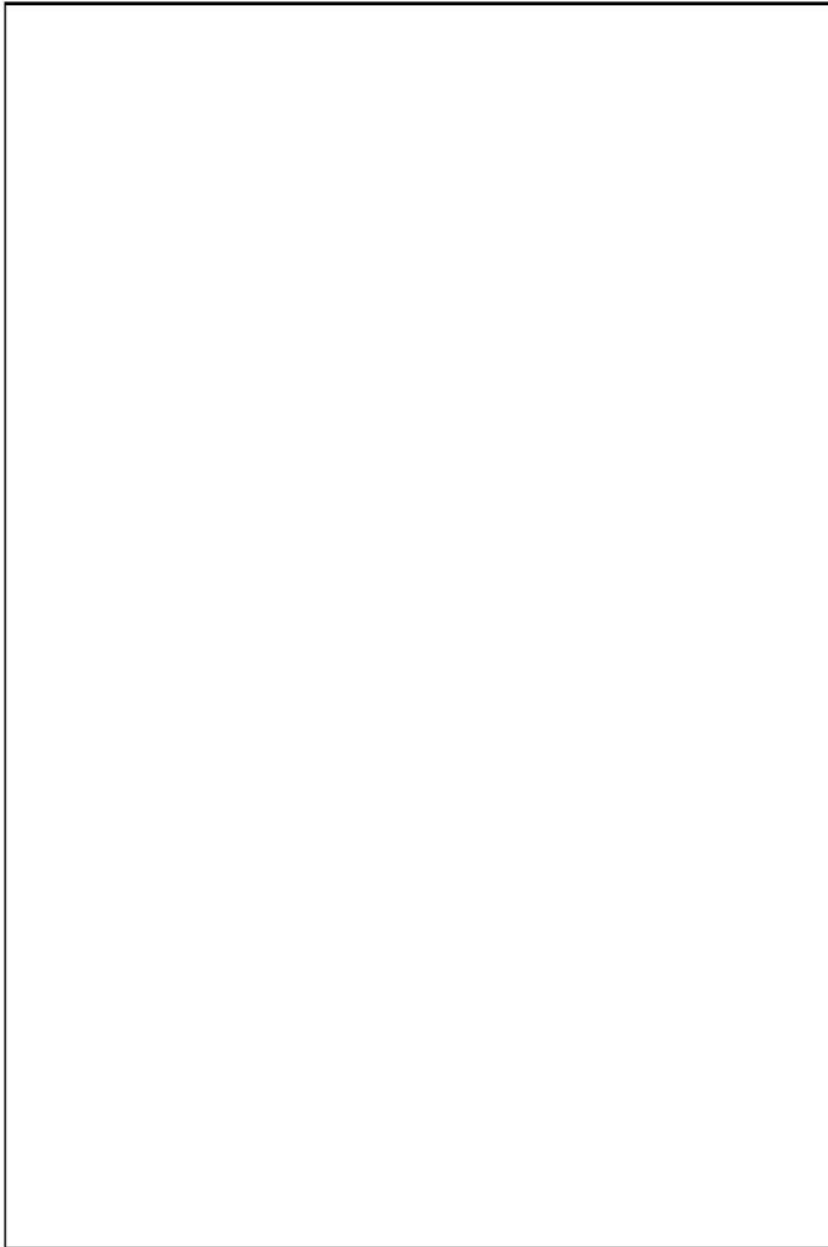
सबक़ -4

ईमान व अमल
(विश्वास और कर्म)

ऐ ईमान लाने वालो! ईमान (पक्का यक़ीन) लाओ अल्लाह पर, और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने पैग़म्बर पर उतारी है और हर उस किताब पर जो उससे पहले वो उतार चुका है। और जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों और आखिरी दिन से इनकार किया तो वह भटककर बहुत दूर निकल गया

निसा 4: 136

जो लोग गैब (छिपी हुई बातें, जो इंसानी दिमाग से परे है) पर ईमान लाते हैं, और नमाज कायम करते हैं, और जो माल हमने दिया उसमें से खर्च करते हैं (नेक कामों में) और जो ईमान लाते हैं जो आपकी तरफ उतारा गया, और जो आपसे पहले उतारा गया, और वे आखिरत (परलोक) पर भी यक़ीन रखते हैं। यही लोग अपने रब की हिदायत पर हैं, और यही लोग कामयाब हैं।

बक़र 2: 3-5

ये सब अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और रसूलों को मानते हैं और उनका कहना यह है कि हम अल्लाह के रसूलों को एक दूसरे से अलग नहीं करते । हमने

सुना और इताअत कबूल की, मालिक हम तुझसे माफी चाहते हैं और हमें तेरी ही तरफ पलटना है।

बकर 2: 285

नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे मशरिक (पूरब) या मगरिब (पश्चिम) की तरफ कर लिए, बल्कि नेकी तो हकीकत में उस शख्स की नेकी है, जो ईमान लाए (दिल से मानें) –

1 अल्लाह पर
2 आखिरत के दिन पर
3 फरिश्तों पर
4 किताबों पर और
5 पैगम्बरों पर

और अल्लाह की मोहब्बत में अपना मनपसन्द माल रिश्तेदारों और यतीमों पर, मिस्कीनों और मुसाफिरों, मदद के लिए हाथ फैलाने वालों, और गुलामों की रिहाई पर खर्च करें, नमाज कायम करें और जकात दें। और नेक लोग वे हैं कि जब अहद (वादा) करे तो उसे पूरा करे और तंगी और मुसीबत के वक्त में और सच और झूठ की लड़ाई में सब्र करे, यही हैं सच्चे लोग और यही लोग अल्लाह से डरने वाले (पाप से परहेज करने वाले) हैं।

बकर 2: 177

तुम्हारा माबूद (जिसकी उपासना या पूजा की जाए) अकेला माबूद है। उस मेहरबान और दयावान के सिवाय कोई माबूद नहीं ।

बकर 2: 163

जमाने की कसम, इन्सान हकीकत में घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल (कर्म) करते रहे, और एक दूसरे को हक की नसीहत और सब्र की वसीयत (ताकीद) करते रहे।

अस्र 103: 1–3

तुम्हारे लिए अल्लाह के पैगम्बर बेहतरीन नमूना (आदर्श) हैं, यानी उसके लिए जो अल्लाह और आखरी दिन की उम्मीद रखता हो और अल्लाह को बहुत याद करे।

अहजाब 33: 21

कहो, ऐ इन्सानो ! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का पैगम्बर हूँ जो जमीन और

आसमानों का मालिक है। उसके सिवाय कोई अल्लाह नहीं है। वही जिंदगी देता है और वही मौत देता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए उम्मी (जो पढ़े लिखे नहीं है) नबी पर जो अल्लाह के हुक्म मानता है, और पैरवी करो उसकी, उम्मीद है कि तुम सच्चा रास्ता पा लोगे ।

आराफ 7: 158

अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करने वाले तो वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह और आखिरत के दिन को मानें और नमाज कायम करें, जकात दें, और अल्लाह के सिवाय किसी से न डरें । उन्हीं से उम्मीद है कि वे सीधे रास्ते चलेंगे ।

तौबा 9: 18

ऐ नबी (स.अ.व.) उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हे बताऊं तुम्हारे रब ने क्या पाबंदियां लागू की हैं,

यह कि :

1 उसके (रब के) साथ किसी को शरीक न करो ।

2 और वाल्दैन (मां बाप) के साथ नेक सलूक करो ।

3 और अपनी संतान को गरीबी की वजह से कत्ल न करो। हम तुम्हें भी रिज्क (रोजी रोटी) देते हैं और उनको भी देंगे।

4 और बेशर्मी की बातों के करीब भी न जाओ, चाहें वे खुली हों या छिपी।

5 और किसी जान को जिसे अल्लाह ने मोहतरम (इज्जत के काबिल) ठहराया है हलाक न करो मगर हक के साथ। यह बातें हैं जिनकी हिदायत उसने तुम्हें की है शायद कि समझबूझ से काम लो ।

6 और यह कि यतीम के माल के करीब न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतरीन हो, यहां तक कि वह बालिग हो जाए।

7. और नाप तोल में पूरा इंसाफ करो। हम हर आदमी पर जिम्मेदारी का उतना ही बोझ रखते हैं जितनी उसकी ताकत है।

8. और जब बात कहो तो इंसाफ की कहो, भले ही मामला अपने रिश्तेदारों का ही क्यों न हो ।

9. और अल्लाह से किए गए अहद (करार) को पूरा करो। इन बातों की हिदायत अल्लाह ने तुम्हें की है, शायद कि तुम नसीहत कबूल करो।

10. इसके साथ यह हिदायत है कि यही मेरा सीधा रास्ता है, इसलिए तुम उस पर चलो

और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे उसके (अल्लाह के रास्ते) से हटाकर तुम्हें गुमराह कर देंगे। यह वह हिदायत है जो तुम्हारे रब ने तुम्हें की है, शायद कि तुम बुरे कामों से बचो ।

अनआम 6 : 151-153

और रात और दिन और सूरज और चाँद उसकी निशानियों में से हैं। तुम लोग न तो सूरज को सजदा (आदर और वंदना में जमीन पर माथा टेकना) करो, न चाँद को बल्कि अल्लाह ही को सजदा करो, जिसने इन तमाम चीजों को पैदा किया है।

हा मीम सजदा 41: 37

हम तेरी ही इबादत (उपासना, पूजा) करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं।

फातिहा 1: 4

अगर अल्लाह तुम्हारा मददगार हो तो तुम पर कोई गालिब (नियंत्रण, विजय) नहीं आ सकता। अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो फिर कौन हो सकता है जो इसके बाद, तुम्हारी मदद करे? और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए ।

आले इमरान 3: 160

लोगो! उसी की पैरवी (अनुसरण) करो जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर उतरा है। और उसको छोड़कर (अपने मन घड़ंत) दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो । मगर तुम बहुत कम नसीहत मानते हो।

आराफ 7: 3

वे लोग जिन्होंने उस (अल्लाह) के सिवाय दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं और अपने इस फअल (हरकत) की यह तोजीह (सफाई) बयान करते हैं कि हम तो सिर्फ इसकी इबादत (पूजा, उपासना) इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी रसाई (पहुंच) करा दें। अल्लाह यकीनन उनके दरमियान फैसला कर देगा जिनमें वे इख्तिलाफ कर रहे हैं। अल्लाह किसी भी ऐसे आदमी को हिदायत (सही रास्ते की समझ) नहीं देता जो झूठा और मुनकिर (इंकार करने वाला) हो।

जुमर 39 : 3

आखिर उस शख्स से ज्यादा बहका हुआ इंसान और कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो कयामत तक उसे जवाब नहीं दे सकते, बल्कि इससे भी बेखबर

कि पुकारने वाले उनको पुकार रहे हैं। और जब तमाम इंसान इकट्ठे किए जाएंगे जो उस समय वे अपने पुकारने वालों के दुश्मन और उनकी इबादत के मुनकिर (इनकार करने वाले) होंगे ।

अहकाफ 46: 5-6

अगर उन्हें (मरे हुए लोगों को) पुकारो तो वे तुम्हारी दुआएं (प्रार्थना) सुन नहीं सकते और सुन लें तो उनका तुम्हें कोई जवाब नहीं दे सकते और कयामत के दिन वे तुम्हारे शिर्क (अल्लाह की सत्ता, गुण और नाम में किसी दूसरे को शामिल करना) का इनकार कर देंगे।

फातिर 35: 14

और वे दूसरी हस्तियां जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं वे किसी चीज के भी खालिक (पैदा करने वाले, बनाने वाले) नहीं हैं। मुर्दा हैं ना कि जिन्दा और उनको कुछ मालूम नहीं हैं कि उन्हें कब (दुबारा जिन्दा करके) उठाया जाएगा ।

नहल 16: 20-21

और जिन्दे और मुर्दे हरगिज बराबर नहीं हैं। अल्लाह जिसे चाहता है सुनवाता है। मगर (ऐ नबी स. अ. व.) तुम उन लोगों को नहीं सुनवा सकते जो कब्रों मे दफन किए हुए हैं।

फातिर 35: 22

यकीनन (यह पक्की बात है) तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते।

नमल 27: 80

(यहां उलमा ने मुर्दों का अर्थ उन लोगों से लिया है जिनकी अन्तर आत्मा मर चुकी है)

कह दीजिए कि, मेरी नमाज और मेरे तमाम मरासीमे अबूदियत (कुरबानी, बंदगी व परस्तिश, वंदना) मेरा जीना और मेरा मरना ,सब कुछ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, जिसका कोई शरीक नहीं। इस बात का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं अल्लाह के फरमाबरदारों में सबसे पहला फरमाबरदार हूँ।

अनआम 6: 162-163

तू अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद (वंदना और पूजने के लायक) न बना वरना मलामत जदा और बे यारो मददगार बैठा रह जाएगा । तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम

लोग किसी की इबादत न करो मगर सिर्फ उसकी (रब की)। वाल्दैन (मां बाप) के साथ नेक सुलूक करो । अगर तुम्हारे पास, उनमें से कोई एक, या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हे उफ़ तक न कहो न उन्हें झिड़क कर जवाब दो, बल्कि उनसे एहतराम (अदब) के साथ बात करो और नरमी और रहम के साथ उनके सामने पेश आओ, और दुआ किया करो- परवरदिगार उन पर रहम फरमा जिस तरह उन्होंने रहमत व लाड प्यार के साथ मुझे बचपन में पाला था।

तुम्हारा रब खूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम सालेह (नेक काम करने वाले) बन कर रहो तो वह ऐसे सब लोगों के लिए दरगुजर (माफ) करने वाला है, जो अपने कसूर पर मुतनब्बे (टोके जाने पर) होकर बंदगी के रवैये की तरफ पलट आएं । रिश्तेदारों को उनका हक दो और मिसकीन (जरूरतमंद) और मुसाफिर को उसका हक दो। फिजूलखर्ची न करो, फिजूल खर्च लोग शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। अगर उनसे (हाजतमंद, रिश्तेदार और मुसाफिर) तुम्हें बचना हो, इस बिना पर कि अभी तुम अल्लाह की उस रहमत को जिसके तुम उम्मीदवार हो, तलाश कर रहे हो तो उन्हें नरम जवाब दे दो ।

न तो अपना हाथ गरदन से बांधे रखो, न उसे बिलकुल खुला छोड़ दो कि मलामत ज़दा और आजिज बनकर रह जाओ । तेरा रब जिसके लिए चाहता है तंगी (कमी) कर देता है वह अपने बंदों के हाल से बाखबर है और उन्हें देख रहा है। अपनी औलाद को गरीबी के डर से कत्ल न करो। हम उन्हें भी रिज्क (धन, कमाई) देंगे और तुम्हें भी। हकीकत में उनका कत्ल बड़ी गलती है। जिना (व्यभिचार) के करीब न भटको वह बहुत बुरा काम है। और बड़ा ही बुरा रास्ता है। किसी आदमी को कत्ल न करो , जिसे अल्लाह ने हराम किया है, मगर हक के साथ। जो मजलूम (जिस पर जुल्म किया जाए) कत्ल किया गया हो उसके वारिस को हमने कसास (बदला, मौत के बदले मौत) लेने का हक दिया है। पस चाहिए कि वह कत्ल में हद से न निकले। उसकी मदद की जाएगी। यतीम के माल के पास न फटको, मगर हुस्न तरीके से यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। अहद (वादे) की पाबंदी करो, बेशक वादे के बारे में तुमको जवाब देना पड़ेगा । नाप से दो तो पूरा कर दो और तोलो तो ठीक तराजू से तोलो। और अंजाम (परिणाम) के लिहाज से यह बेहतर तरीका है। किसी ऐसी चीज के पीछे न लगो जिसका तुम्हें ज्ञान (इल्म) न हो। यकीनन, आंख, कान और दिल सब ही से पूछताछ होगी। जमीन पर अकड़कर न चलो, तुम न जमीन को फाड़ सकते हो न पहाड़ों की ऊंचाई को पहुंच सकते हो। इन मामलों में से हर एक का बुरा पहलू तेरे रब के नजदीक नापसंदीदा है। यह अक्लमंदी की बातें हैं जो तेरे रब ने तुझ पर वही (अल्लाह का संदेश पैगम्बर को) की हैं।

बनी इस्राइल 17: 22-39

और जो ईमान लाएंगे और नेक अमल करेंगे उनके लिए मगफिरत (कयामत के दिन

माफी) और बड़ा अज्र (बदला) है।

फातिर 35: 7

ये लोग अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं उनको गालियां न दो, कहीं ऐसा न हो कि यह भी जिहालत (अज्ञानता) में हद से बढ जाएं और अल्लाह को गालियां देने लगे।

अनआम 6 : 108

कह दीजिए कि मेरी नमाज, मेरी कुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ संसार के मालिक के लिए है उसका कोइ शरीक नहीं, इस बात का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं (मुहम्मद स. अ. व.) अल्लाह के फरमाबरदारों में सबसे पहला फरमाबरदार (आज्ञाकारी) हूं।

अनआम 6: 162-163

सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ लो और मतभेद में मत उलझो।

आले इमरान 3: 103

अल्लाह और उसके रसूल के कहने पर चलो और आपस में लड़ो झगड़ो नहीं वरना तुम कमजोर पड़ जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।

अनफाल- 8: 46

तुम (ईमान वाले) बेहतरीन उम्मत (समुदाय) हो जो सारे इंसानों के लिए पैदा की गई है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर पूर्ण (कामिल) ईमान रखते हो।

आले इमरान 3: 110

तुम पर फर्ज किया गया है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आए और वह कुछ माल छोड़ रहा हो तो वह वाल्दैन और रिश्तेदारों के लिए भले दस्तूर (रिवाज) के मुताबिक वसीयत करे। अल्लाह से डरने वालों पर यह एक हक है ।

बकर 2: 180

सबक़: 5

गुनाह (पाप) - शिर्क व कुफ्र

कुफ्र (इनकार) व शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना)

कह दो: ऐ इनकार करने वालो (न मानने वालो) मैं उनकी इबादत (बन्दगी, पूजा) नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो। न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ। और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूँ जिनकी इबादत तुमने की है और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।

काफिरून 109 : 1-6

जो लोग अल्लाह के हुक्म व हिदायत को मानने से इन्कार करते हैं और उसके पैगम्बरों को ना हक (बेजा) कत्ल करते हैं और ऐसे लोगों को भी जो अदल व इन्साफ का हुक्म देते हैं, कत्ल करते हैं, ऐसे लोगों को दर्दनाक अजाब की खुशखबरी सुना दो। ये वे लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आखिरत में बेकार गए और कोई भी उनका मददगार नहीं है।

आले इमरान 3: 21-22

अल्लाह उस जुर्म को माफ नहीं करता कि किसी को उसका शरीक (साझी) ठहराया जाए।

निसा 4: 48

जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा '' प्यारे बेटे अल्लाह के साथ

शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है।

लुकमान 31: 13

और अल्लाह को छोड़कर किसी हस्ती को न पुकारो जो तुझे न फायदा पहुँचा सकती है न नुकसान। अगर तू ऐसा करेगा तो जालिमों में से होगा।

यूनुस 10: 106

ऐ लोगो ! बेशक हमने तुम सबको एक ही मर्द और एक औरत से पैदा किया है और फिर तुम्हारी कोमें और बिरादरियां बना दी ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। हकीकत में अल्लाह के नजदीक तुम में सबसे ज्यादा इज्जत वाला वह है जो तुम्हारे अन्दर सबसे ज्यादा परहेजगार (अल्लाह से डरने वाला) है।

हुजुरात 49: 13

तो क्या तुम किताब (कुरआन) के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से के साथ कुफ्र(इन्कार) करते हो, फिर तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सजा इसके सिवाय और क्या है कि दुनिया की जिन्दगी में जलील (बेइज्जत) व ख्वार होकर रहें और आखिरत में कठोर से कठोर अजाब (सजा) की तरफ फेर दिए जाएं।

बकर 2: 85

जिन लोगों ने कुफ्र (इनकार) का रवैया अपनाया और कुफ्र की हालत में जान दी, उन पर अल्लाह और फरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत (फटकार) है।

बकर 2: 161

जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और आखिरत के दिन (कयामत) से इनकार किया वह गुमराही में भटककर दूर निकल गया।

निसा 4: 136

उनसे कहो: अल्लाह और रसूल की इताअत कबूल करो। फिर अगर वे तुम्हारी यह दावत कबूल न करें तो यकीनन यह मुमकिन नहीं कि अल्लाह ऐसे लोगों से मोहब्बत करे जो उसकी और उसके रसूल की इताअत से इन्कार करते हों।

आले इमरान 3: 32

जो लोग अल्लाह के उतारे कानून के मुताबिक फैसला न करें वही काफिर हैं।

माइदा 5: 44

झूटी बातों से परहेज करो ।

हज 22: 30

अल्लाह की बंदगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ। अच्छा सलूक करो मां बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों और जरूरतमंदों के साथ, पड़ोसियों के साथ और साथ रहने वालों के साथ और मुसाफिर के साथ, और उनके साथ जो तुम्हारे अधीन हों। अल्लाह ऐसे आदमी को पसन्द नहीं करता जो इतराता हो और डींगें मारता हो और ऐसे लोग भी अल्लाह को पसंद नहीं हैं जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी की हिदायत देते हैं, और जो कुछ अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उन्हें दिया है उसे छुपाते हैं। ऐसे काफिर लोगों के लिए हमने रुसवा (बेइज्ज़त) करने वाला अज़ाब (सज़ा) तैयार कर रखा है। और वे लोग भी अल्लाह को नापसंद हैं जो अपने माल सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं।

निसा 4: 36-38

ऐ ईमान वालो! अपने सदके (खैरात) को एहसान जताकर और दुख देकर उस आदमी की तरह बरबाद न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल खर्च करता है और अल्लाह और आखरी दिन पर ईमान नहीं रखता ।

बकर 2: 264

और कयामत के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ घड़कर थोपा है और उनके चेहरे काले हैं। क्या घमंडियों का ठिकाना जहन्नम (नर्क) नहीं है?

जमर 39: 60

रिश्तेदारों को उनका हक दो और मिसकीन (मोहताज, जरूरतमंद) और मुसाफिर को उनका हक दो। फिजूलखर्ची न करो, फिजूलखर्च लोग शैतान के भाई हैं। और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है।

बनी इस्राईल 17: 26-27

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जानते बूझते अल्लाह और उसके रसूल (स. अ. व.) के साथ खयानत (धोखाधड़ी, विश्वासघात) न करो, अपनी अमानतों में खयानत न करो ।

अनफाल 8: 27

और जो कोई खयानत करे (धोखा देकर माल रख ले) तो वह अपनी खयानत समेत कयामत के दिन हाजिर हो जाएगा। फिर हर एक को उसकी कमाई का बदला मिल जाएगा और किसी पर जुल्म न होगा ।

आले इमरान 3: 161

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अगर कोई फासिक (अल्लाह की नाफरमानी करने वाला) तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए तो छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ व नुकसान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।

हुजुरात 49: 6

ऐ ईमान लाने वालो ! बहुत गुमान करने से बचो (परहेज करो) क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और तुम में से कोई किसी की गीबत (चुगली, निन्दा) न करे। क्या तुम में से ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करेगा? देखो तुम खुद इससे घृणा करते हो। अल्लाह से डरो, अल्लाह बड़ा तौबा कबूल करने वाला और रहीम है।

हुजुरात 49: 12

(जब किसी आदमी में कोई बुराई मौजूद है तो उसे बयान करने मे क्या हर्ज है ? जवाब में प्यारे नबी (सल्ल) में फरमाया - अगर किसी में कोई बुराई है और तुम उसकी गैर मौजूदगी में वह बुराई दूसरों को बताओ तो यही गीबत है। अगर वह बुराई उसमें न हो और तुम उसके सिर थोपो तो यह बोहतान और इल्जाम होगा)

तुम किसी ऐसे आदमी की बात न मानना जो बहुत कसमें खाने वाला हीन (नीच) है, ताने देता है, चुगलियाँ खाता फिरता है, भलाई से रोकता है, जुल्म व ज्यादती में हद से गुजरने वाला है, हक मारने वाला है, क्रूर है और अधम भी।

कलम 68: 10-13

देखो ! तुम लोगों से कहा जा रहा है कि अल्लाह के लिए माल खर्च करो। तुम में से कुछ लोग हैं, जो इसमें कंजूसी कर रहे हैं। हालांकि हकीकत में वे अपने आप से ही कंजूसी कर रहे हैं। अल्लाह तो गनी है। तुम ही उसके मोहताज हो अगर तुम उसके हुक्म न मानोगे तो वह तुम्हें मिटाकर तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा और वे तुम जैसे न होंगे।

मुहम्मद 47: 38

ऐ ईमान लाने वालो! ये शराब और जुए और देवस्थान और पांसे तो गंदे शैतानी काम हैं। अत: तुम इनसे अलग रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ । शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के जरिए तुम्हारे बीच दुश्मनी और कड़वाहट पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे, तो क्या तुम बाज नहीं आओगे?

माइदा 5: 90-91

और अल्लाह फसाद (लड़ाई-झगड़ा) फैलाने वालों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता।

माइदा 5: 64

और जमीन में फसाद फैलाने की कोशिश न कर अल्लाह फसाद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।

कसस 28: 77

जो गुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के कुसूर माफ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत पसन्द हैं।

आले इमरान 3: 134

जिस किसी आदमी को किसी के खून का बदला लेने या धरती में फसाद फैलाने के सिवाय किसी और वजह से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इन्सानों का कत्ल कर डाला। और जिसने जिंदगी बख्शी (यानी जान बचाई) उसने मानो सारे इन्सानों को जिंदगी दी।

माइदा 5: 32

यतीम को मत दबाओ और मांगने वालों को मत झिड़को।

जुहा 93: 9-10

ऐ ईमान वालो। अल्लाह के लिए उठने वाले, इन्साफ की गवाही देने वाले बनो और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें हरगिज इस बात पर न उभारे कि तुम इन्साफ करना छोड़ दो, तुम्हें चाहिए कि (हर हालत में) इन्साफ करो। यही परहेजगारी और अल्लाह से डर से मेल खाती बात है। अल्लाह का डर रखो। बेशक अल्लाह उन बातों को जानता जो तुम करते हो।

माइदा 5: 8

ऐ लोगो। जो ईमान लाए हो, तुम क्यों वह बात कहते हो जो करते नहीं हो ? अल्लाह की निगाह में यह बात बहुत ही नापसन्दीदा बात है कि तुम वह बात कहो जो करते नहीं।

सफ़्फ़ 61: 2-3

तबाही डंडी मारने वालों (कम तोलने-नापने वाले) के लिए। जो नापकर लोगों से लेते हैं तो पूरा लेते हैं। और जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो कम देते हैं। क्या वे समझते नहीं कि उन्हें (जिन्दा होकर) उठना है, एक बड़े दिन। उस दिन संसार के सब लोग रब के सामने (हिसाब लिए) खड़े होंगे।

मुतफ़्फ़िफ़ीन 83: 1-6

सबक़ - 6

नमाज

ऐ इन्सानो! इबादत (बन्दगी, वंदना) करो अपने रब की जिसने तुमको पैदा किया और उनको जो तुमसे पहले हुए हैं - ताकि तुम जहन्नम (नर्क, दोजख) से बचे रहो। उस परवरदिगार की इबादत करो, जिसने तुम्हारे लिए जमीन को फर्श बनाया और आसमान को छत की तरह ऊँचा किया। फिर ऊपर से पानी बरसाया और इससे तरह-तरह के फल तुम्हारे खाने के लिए पैदा किए।

बकर 2: 21-22

और मैंने जिन्नों और इन्सानों को पैदा ही इसलिए किया कि वे मेरी इबादत करें।

जारियात 51: 56

नमाज कायम करो और मुशरिकों में न हो जाओ।

रूम 30: 32

कह दीजिए हकीकत में सही रहनुमाई (मार्गदर्शन) तो बस अल्लाह ही की रहनुमाई है और उसकी तरफ से हमें यह हुक्म मिला है कि कायनात (ब्रह्माण्ड) के मालिक के आगे इताअत (बन्दगी) में सिर झुका दें। नमाज कायम करें। इसका तक़वा (परहेजगारी और अल्लाह का डर) अपनाओ और वही है जिसकी तरफ इकट्ठे किए जाओगे।

अनआम 6: 71-72

हिदायत है उन मुत्तकियों के लिए जो गैब (अज्ञात, छिपी हुई बातें) पर ईमान लाते हैं और नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

बकर 2: 2-3

बहिश्त (स्वर्ग) वाले पूछ रहे होगें जहन्नमी (नर्क में रहने वाले) मुजरिमों से 'किस चीज ने तुम्हें दोजख में ला डाला ?' वे जवाब देगें 'हम नमाज न पढ़ते थे।'

मुद्दस्सिर 74 : 40-43

पस अगर ये तौबा कर लें और नमाज कायम करें और जकात दें तो यह तुम्हारे दीनी भाई हैं।

तौबा 9: 11

ये (मोमिनीन) वे लोग हैं कि अगर हम इन्हें जमीन पर सत्ता और हुकूमत दें तो यह नमाज कायम करेंगे और जकात अदा करेंगे भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे।

हज 22: 41

और जो लोग अपनी नमाज की हिफाजत करते हैं, ये लोग इज्जत के साथ जन्नत के बागों में रहेंगे।

मआरिज 70 : 34-35

और नमाज कायम करो यकीनन नमाज फहश (बेशर्मी) और बुरे कामों से रोकती है।

अनकबूत 29 : 4-5

तबाही है उन नमाजियों के लिए जो अपनी नमाज से गफलत बरतते हैं।

माऊन 107: 4-5

नमाज वास्तव में ऐसा फर्ज है जो समय की पाबंदी के साथ ईमान वालों पर वाजिब किया गया है।

निसा 4: 103

और अपने रब की तारीफ के साथ तसबीह बयान कीजिए सूरज निकलने से पहले और उसके गुरूब (छिपने) होने से पहले और रात की घड़ियों में फिर तसबीह (नमाज) अदा कीजिए और दिन के किनारों पर।

हूद 11: 114

नमाज कायम कीजिए सूरज के ढलने के वक्त से रात के अंधेरे तक और फज्र का कुरआन पढने का एहतमाम कीजिए । बेशक कुरआन हाजरी का वक्त है। (इसमें जोहर, असर, मगरिब, इशा आ गई और कुरआने फज्र से मतलब है फज्र की नमाज)

बनी इस्राईल 17: 78

और अपनी नमाज न बहुत ऊँची आवाज से पढ़ो और न बहुत धीमी आवाज से, इन दोनों के दरमियान औसत दरजे का लहजा अपनाओ ।

बनी इस्राईल 17: 110

कामयाब हो गए ईमान वाले जो अपनी नमाज में खुशू इख्तियार करते हैं। जो बेहूदा बातों से दूर रहते हैं। जो जकात अदा करने वाले हैं। जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले हैं, सिवाय अपनी बीवियों के और लौण्डियों के। कि उनसे ताल्लुक रखने में उन पर कोई इल्जाम नहीं। जो उनके सिवाय और चाहे वही अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदों से निकल जाने वाले हैं। जो अपनी अमानतों और वादे की हिफाजत करने वाले हैं। जो अपनी नमाजों की निगहबानी करते हैं।

मोमिनून: 23 1-9

ऐ ईमान वालो! मदद हासिल करो सब्र और नमाज से।

बकर 2: 153

और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद पढ़ा कीजिए यह आपके लिए मजीद (फजल) है।

बनी इस्राईल 17: 79

मोमिनो! जब जुमे के दिन नमाज के लिए अजान दी जाए तो अल्लाह की याद की तरफ झपट जाया करो और खरीद-फरोख्त छोड़ दिया करो। यह तुम्हारे हक में बेहतर है, अगर तुम समझ से काम लो ।

जुमुआ 62: 9

पस नमाज कायम करो, जकात अदा करो और अल्लाह से वाबिस्ता हो जाओ (जुड़ जाओ)।

हज 22: 78

और सजदा करो और (अल्लाह से) करीब हो जाओ

अलक- 96: 19

और रुकू (झुकना) करो, रुकू करने वालों के साथ।

बक़र 2 - 2:43

ऐ आदम की औलाद ! हर नमाज के मौके पर अपनी जीनत का लिबास पहन लिया करो और खाओ और पीओ और बेजा न उड़ाओ ।

आराफ 7: 31

और मेरी याद के लिए नमाज कायम करो ।

ताहा 20: 14

और जब तुम सफर पर निकलो तो इस में कोई हर्ज नहीं है कि नमाज को कसर (छोटा) कर दो । (जहाँ फर्ज चार हो दो कर दो)

निसा 4: 101

पाठ - 7

कुछ बड़े फर्ज (कर्त्तव्य)

रोजा

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम पर रोजे फर्ज कर दिए गए हैं, जिस तरह तुमसे पहले पैगम्बरों के मानने वालों पर फर्ज किए गए थे । उम्मीद है कि इनसे तुम्हारे अंदर तकवा (परहेजगारी) पैदा होगा । चंद तय दिनों के रोजे हैं। अगर तुम में से कोई बीमार हो, या सफर पर है तो दूसरे दिनों में इतनी गिनती पूरी कर ले। और जिन (बीमार और मुसाफिरों) को इसकी (मोहताजों को खिलाने की) सामर्थ्य हो, उनके जिम्मे बदले में एक मोहताज का खाना है। और जो अपनी खुशी से कुछ ज्यादा भलाई करे तो यह उनके लिए बेहतर है। लेकिन अगर समझो तो तुम्हारे हक में अच्छा यही है कि रोजा रखो। रमजान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया। जो इंसानों के लिए सरासर हिदायत (मार्गदर्शन) है और ऐसी सरल शिक्षाओं पर आधारित है जो राहेरास्त (सच का रास्ता) दिखाने वाली और सच और झूठ का फर्क खोलकर रख देने वाली है। इसलिए अब से जो शख्स इस महीने को पाए उसको लाजिम है कि पूरे महीने के रोजे रखे ।

बकर 2: 183-185

हमने इस कुरआन को एक कद्र वाली (इज्जत वाली) और अजमत (बड़प्पन) वाली रात में उतारा। जानते हो शबे कद्र क्या है ? यह एक ऐसी रात है जो हजार महीनों से ज्यादा बेहतर है (फजीलत रखती है)। इस रात में फरिश्ते और रूह (जिबराइल अलै.) अपने रब के हुक्म से उतरते हैं। आदेश लेकर उतरते हैं। वह रात सरासर सलामती है तुलुअ फज्र तक।

कद्र 97: 1-4

जकात

हिदायत है उन परहेजगारों (वे लोग जो अल्लाह से डरते हुए पापों से दूर रहते है) के लिए जो गैब पर ईमान लाते हैं, नमाज कायम करते हैं, और जो कुछ हमने इन्हें दिया है उसमें से (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं।

बकर 2: 2-3

बेशक कामयाब हो गए ईमान वाले जो अपनी नमाजों में खुशु (मन लगाकर) इख्तियार करते हैं लगू (बेहूदा) बातों से दूर रहते हैं, जकात के तरीके पर आमिल रहते हैं।

मोमिनून 23: 1-4

जो लोग अपना माल अल्लाह की राह मे खर्च करते हैं उनके खर्च की मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना बोया जाए और उस से सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ दाने हों। इसी तरह अल्लाह जिस अमल (कर्म) को चाहता है बढ़ाता है। वह फराख दस्त (मुट्ठी खुली रखने वाला) और अलीम (जानने वाला) है।

बकर 2: 261

जो ब्याज तुम देते हो कि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाएगा, अल्लाह के नजदीक वह नहीं बढ़ता और जो जकात तुम अल्लाह की खुशनूदी (खुशी) हासिल करने के इरादे से देते हो, उसी के देने वाले वास्तव मे अपना माल बढाते हैं।

रूम 30: 39

जो लोग ईमान लाएं और नेक अमल करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें उनका बदला बिना किसी शक के उनके रब के पास है और उनके लिए न कोई डर है न किसी दुख का मौक़ा है।

बक़र 2: 277

ऐ नबी ! आप उनके मालों में से सदक़ा लेकर इन्हें पाक कीजिए और (नेकी) की राह में इन्हें बढ़ाइए ।

तौबा 9: 103

और मोमिनीन के मालों में मांगने वालों और नादारों का हक़ होता है।

मआरिज 70: 24-25

वह अपना माल बावजूद महबूब (माल से प्रेम) होने के रिश्तेदारों और यतीमों पर, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर, मदद के लिए हाथ फैलाने वालों पर ख़र्च करता है और ग़ुलामों की आज़ादी पर ख़र्च करता है।

बक़र 2: 177

जो लोग सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उन्हें ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बर सुना दो। एक दिन आएगा कि उस सोने चाँदी पर जहन्नुम की आग दहकाई जाएगी और फिर उसी से उन लोगों की पेशानियों, पहलुओं और पीठों को दाग़ा जाएगा ।

तौबा 9: 34-35

ऐ ईमान वालो जो पाक माल तुमने कमाया है और जो पैदावार हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली है उसमें से (सदक़ा और दान) दिया करो ।

बक़र 2: 267

और ज़कात का माल तो सिर्फ़ फ़क़ीरों (मोहताज जिनके पास आमदनी का साधन न हो) के लिए और मिस्कीनों के लिए है और उन लोगों के लिए जो ज़कात के काम पर नियुक्त हैं, और जिनका दिल मोहने के लिए और (यह माल) ग़ुलामों को आज़ाद कराने के लिए, और क़र्ज़दारों की मदद करने में और अल्लाह की राह में (तमाम नेकी के काम जिनसे अल्लाह ख़ुश हो, उलमा की बड़ी तादाद के अनुसार इसका मतलब अल्लाह के लिए

जिहाद फी सबिलिल्लाह है), और मुसाफिर नवाजी में काम लेने के लिए है, एक फरीजा (कर्त्तव्य) है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और दाना (अक्लमंद) व बीना (देखने वाला) है।

तौबा 9: 60

वह अल्लाह ही है जिसने तरह-तरह के बाग और बेलों के बाग (अंगूर आदि) और खजूर के बाग और खेतियाँ उगाईं जिनसे अलग-अलग प्रकार की पैदावार लेते हैं, अनार और जैतून जो एक दूसरे से मिलते -जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते । जब वे फल दें तो उनके फल खाओ और अल्लाह का हक अदा करो जो उस फसल की कटाई के दिन वाजिब होता है।

अनआम 6: 141

हज

बेशक सबसे पहली इबादतगाह जो इंसानों के लिए बनाई गई वही है जो मक्का में है। इसको खैरो बरकत दी गई थी और तमाम दुनिया वालों के लिए मार्गदर्शन (हिदायत) के लिए केन्द्र बनाया गया था। इसमें खुली हुई निशानियां हैं। इब्राहीम का इबादत का स्थान है और इसका हाल यह है कि जो इसमें दाखिल हुआ वह (मरते दम तक अल्लाह की फरमाबरदारी और वफादारी पर कायम रहा)। लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जो इस घर तक पहुँचने की ताकत रखता हो तो उस घर (काबा) का हज करे, और जो कोई इस हुक्म की पैरवी से इन्कार करे तो उसे मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज है।

आले इमरान 3: 96-97

हज के चंद महीने हैं जो सबको मालूम है।

बकर 2: 197

और सिर के बाल उस समय तक न मुण्डवाओ जब तक कुरबानी का जानवर अपने ठिकाने पर न पहुँच जाए ।

बकर 2: 196

इसमें कोई हर्ज नहीं कि तुम हज के साथ-साथ अपने परवरदिगार का फजल तलाश करो।

बकर 2: 198

और चाहिए कि पुराने घर (काबा) का तवाफ(सात बार परिक्रमा) करे ।

हज 22: 29

फिर जब अराफात (जगह का नाम) से लौटो तो मुजलदफा के पास टहर कर अल्लाह को याद करो।

बकर 2: 198

इसमें शक नहीं कि सफा व मरवा (पहाड़ियों के नाम) अल्लाह की निशानियों में से हैं। पस जो शख्स अल्लाह के घर का हज करे या उमरा करे कोई गुनाह की बात नहीं कि वह इन दोनों पहाड़ियों के बीच फेरा लगाए ।

बकर 2: 158
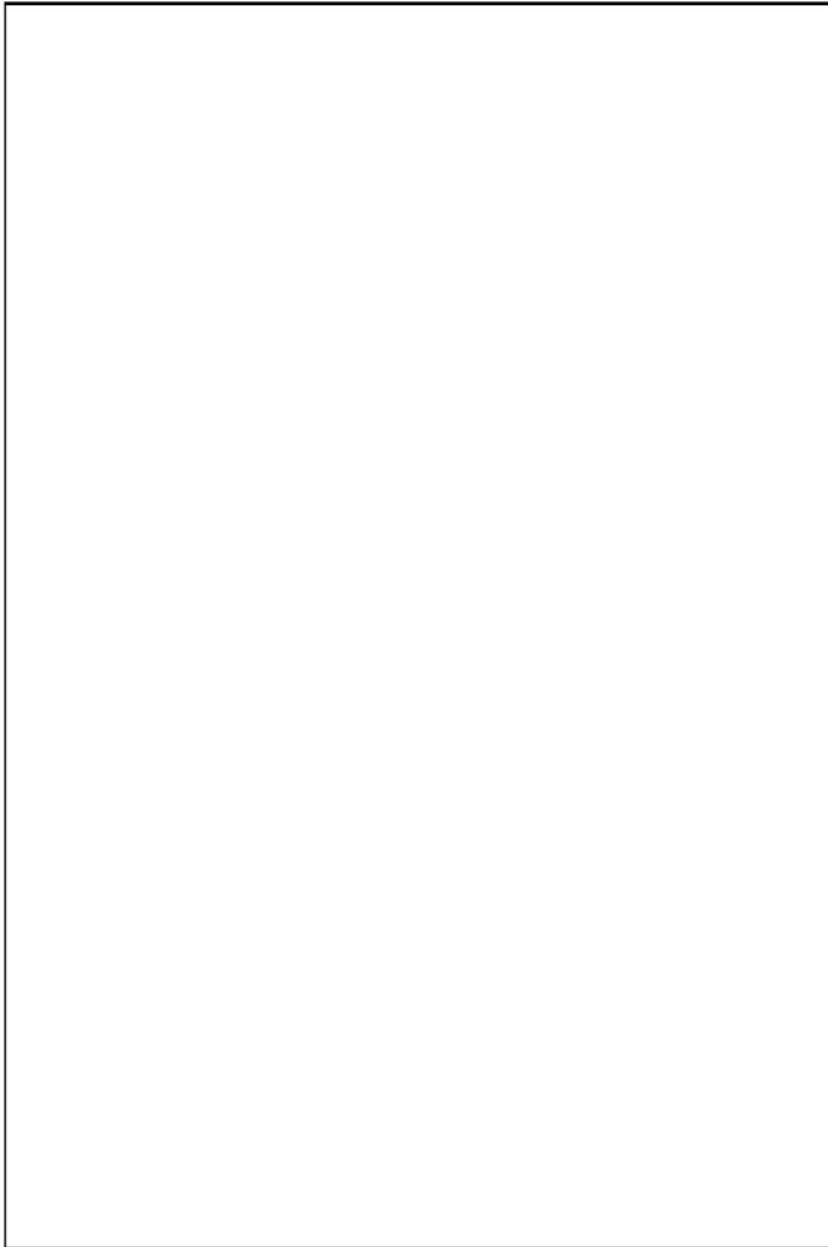
सबक़–8

नैतिक मूल्य (अखलाकी कद्रें)
Moral Values

नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूरब की तरफ कर लिए या पश्चिम की तरफ बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अन्तिम दिन (कयामत) और फरिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके पैगम्बरों को दिल से माने, और अल्लाह की मोहब्बत में अपना दिल पसंद माल रिश्तेदारों, और यतीमों (अनाथ) पर, मिस्कीनों और मुसाफिरों पर, मदद के लिए हाथ फैलाने वालों पर, और गुलामों की रिहाई पर खर्च करें। नमाज कायम करें और जकात दें। और नेक वे लोग हैं जब वादा करें उसे निभाएं और तंगी व मुसीबत के समय में और सच और झूठ की लड़ाई में सब्र करें। यह हैं सच्चे लोग और यही अल्लाह से डरने वाले (परहेजगार) हैं।

बकर 2: 177

तुम नेकी को नहीं पहुंच सकते जब तक कि अपनी वह चीजें (अल्लाह की राह में) खर्च न करो जिन्हें तुम प्यार करते हो और जो कुछ तुम खर्च करोगे अल्लाह उससे बेखबर न होगा।

आले इमरान 3: 92

लोगो ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है फिर तुम्हारी कौमें और बिरादरियां बना दी ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो । हकीकत में अल्लाह के नजदीक तुम में सबसे ज्यादा इज्जत वाला वह है जो तुम्हारे अन्दर सबसे ज्यादा परहेजगार (अल्लाह से डरने वाला) है।

हुजुरात 49: 13

फिर तुम्हारा क्या खयाल है कि बेहतर इंसान वह है जिसने अपनी इमारत (भवन) की बुनियाद (आधार) अल्लाह के डर और उसकी खुशी की चाहत पर रखी हो या जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक घाटी की कोख के किनारे पर उठायी और वह उसे लेकर सीधे जहन्नुम (नर्क) की आग मे जा गिरी ? ऐसे जालिम लोगों को अल्लाह कभी सीधी राह (रास्ता) नहीं दिखाता। यह इमारत जो उन्होंने बनाई है, हमेशा उनके दिलों में बे यकीनी की जड़ बनी रहेगी (जिसके निकलने की अब कोई सूरत नहीं है) इसलिए की उनके दिल ही पारा पारा (टुकड़े, टुकड़े) हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला और हकीम व दाना है ।

तौबा 9: 109-110

उस शख्स की बात से अच्छी बात किसकी होगी जिसने अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक काम किया और कहा कि मैं मुसलमान हूँ । और ऐ नबी (स.अ.व.) नेकी और बदी (बुराई) एक से नहीं है, तुम बदी (बुराई) को उस नेकी से मिटाओ जो बेहतरीन हो, तुम देखोगे तुम्हारे साथ जिसकी दुश्मनी थी वह जिगरी दोस्त बन गया। यह गुण (सिफ्त) नसीब नहीं होता मगर उन लोगों को जो सब्र करते हैं, और यह मुकाम (स्थान) नहीं मिलता मगर उन लोगों को जो बड़े भाग्यशाली होते हैं। और शैतान की तरफ से कोई उकसाहट महसूस करो तो अल्लाह की पनाह माँग लो, वह सब कुछ जानता है ।

हमीम सजदा 41: 33-36

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों का साथ दो ।

तौबा 9: 119

ऐ लोगो जो ईमान ले आए हो इंसाफ का झंडा उठाने वाले और अल्लाह के वास्ते गवाह बनो अगरचे तुम्हारे इंसाफ और तुम्हारी गवाही की चोट खुद तुम्हारे ऊपर या तुम्हारे माता पिता और रिश्तेदारों पर ही क्यों न पड़ती हो। मामला पेश करने वाला (मुद्दई) चाहे मालदार हो या गरीब, अल्लाह तुम से ज्यादा उनका खैरख्वाह है इसलिए अपने मन की पैरवी में इंसाफ से बाज न रहो (यानी इंसाफ पर रहो) अगर तुमने लगी

लिपटी बात कही या सच्चाई से पहलू बचाया, तो जान लो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है।

निसा 4: 135

अल्लाह अदल (इंसाफ, न्याय) और सिलारहमी (रिश्तेदारों के मामले मे अहसान की खास सूरत जिसमें खुशहाल लोगों की दौलत में औलाद और माँ बाप के अलावा रिश्तेदारों का भी हक है और उनकी मदद देने के आदेश) का हुक्म देता है और बुराई (बदी) और बेशर्मी और जुल्म और ज्यादती से मना करता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सबक लो। अल्लाह के साथ किए गए वादे को पूरा करो जबकि तुमने उससे कोई अहद बांधा हो, और अपनी कसमें पक्की करने के बाद तोड़ न डालो जबकि तुम अल्लाह को गवाह बना चुके हो। अल्लाह तुम्हारे सब कामों की खबर रखता है

नहल 16: 90 – 91

और नाप तोल में इंसाफ करो। जब बात कहो तो इंसाफ की कहो भले मामला रिश्तेदार ही का क्यों न हो ।

अनआम 6: 153

नेक लोग वे हैं जो अहद (वादा, करार) करें तो उसे पूरा करें ।

बनी इस्राईल 17: 34

मुसलमानो। अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें (माल, सामान, स्थान, बातें आदि) अमानत के मालिक को सौंप दो और जब लोगों के दरमियान फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो। अल्लाह तुमको बहुत ही उम्दा नसीहत करता है।

निसा 4: 58

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जब किसी तय मुद्दत (समय) के लिए आपस में कर्ज का लेन देन करो तो उसे लिख लिया करो। दोनों पक्षों के दरमियान एक आदमी इंसाफ के साथ दस्तावेज लिखे, कर्ज लेने वाला लिखवाए। और जिसे अल्लाह ने लिखने पढ़ने की काबलियत दी हो उसे लिखने से इंकार नहीं करना चाहिए। वह लिखे और लिखवाए वह आदमी जो उधार ले रहा है। और उसे (लिखने वाले को) अपने रब से डरना चाहिए कि जो मामला तय हुआ हो उसमें कोई कमी बेशी न करे । लेकिन अगर उधार लेने वाला खुद नादान (अज्ञानी) हो या बूढ़ा हो, या लिखवा न सकता हो तो उसका प्रतिनिधि इंसाफ के

साथ इमला (दस्तावेज की शर्तें आदि) कराए। फिर अपने मर्दों में से दो गवाह करवालो। हां जो तिजारती लेनदेन आमने-सामने चुका कर आपस में किया जाता हो उसको न लिखा जाए तो कोई हर्ज नहीं।

बकर 2: 282

(मोमिन) अपनी अमानतों (नकद सामान जो किसी के पास हिफाजत के लिए रख दिया हो) और अपने अहद व पैमा (वादे, करार, समझौता) का पास रखते हैं (निभाते हैं) और अपनी नमाजों की मुहाफिजत (निगहबानी यानी नमाज समय पर आदाब व उसके सब भाग लगन के साथ) करते हैं। यही लोग वारिस (उत्तराधिकारी) बनेगें फिरदौस के (स्वर्ग का सबसे अच्छा स्थान) और उसनें हमेशा रहेंगे।

मोमिनून 23: 8-11

हमने अपने रसूलों को साफ साफ निशानियों और हिदायत (मार्गदर्शन) के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मिजान (तराजू, नाप तोल और इंसाफ का स्तर, सच और झूठ का वह मियार जो तोल तोल कर बता देता है कि मानव जीवन व्यवस्था इंसाफ पर स्थापित रहे।) उतारा ताकि लोग इंसाफ पर डटे (कायम) रहें ।

हदीद 57: 25

और जब लोगों के बीच में फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो।

निसा 4: 58

और नाप तोल में पूरा इंसाफ करो, हम हर आदमी पर जिम्मेदारी का उतना ही बोझ रखते हैं जितनी उसमें ताकत है, और जब बात कहो तो इंसाफ की कहो भले ही मामला रिश्तेदारों ही का क्यो न हो ।

अनआम 6: 152

सब्र

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो सब्र और नमाज से मदद लो, अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, ऐसे लोग तो हकीकत में जिन्दा हैं, लेकिन तुम्हें उनकी जिन्दगी का शऊर (समझ) नहीं होता, और हम जरूर तुम्हें डर और खतरे, भुखमरी, जान व माल के नुकसान, और आमदनियों के घाटे में डालकर तुम्हारी आजमाइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र करे और जब कोई मुसीबत पड़े तो कहे 'हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ पलट कर जाना है।' उन्हें खुशखबरी दे दो उन पर उनके रब की तरफ से बड़ी इनायात (देन, रहमत, इनाम) होगी, उसकी रहमत (मेहरबानी) उन पर साया करेगी और ऐसे ही लोग सच्चे रास्ते (राह ए रास्ते) पर हैं ।

बकर 2: 153-157

तुम इस हिदायत की पैरवी (पालन) किए जाओ जो तुम्हारी तरफ वही के जरिए भेजी जा रही है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे, और वही बेहतरीन फैसला करने वाला है।

यूनुस 10: 109

उनका हाल यह होता है कि अपने रब की रजा (खुशी) के लिए सब्र से काम लेते हैं, नमाज कायम करते हैं, हमारे दिए हुए माल में से खुले और छिपे खर्च करते हैं और बुराई को भलाई से दफा (मिटाना) करते हैं, आखिरत का घर इन्हीं के लिए है।

रअद 13: 22

दीन (धर्म) के मामले में कोई जोर जबरदस्ती नहीं है। सही बात गलत विचारों से अलग छांट कर रख दी गई है। अब जो कोई तागूत (जो अपने आपको बंदों का मालिक बना दे और अपनी चलाए) का इनकार करके अल्लाह पर ईमान ले आया उसने ऐसा मजबूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं, और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है। जो लोग ईमान लाते हैं उनका हामी व मददगार अल्लाह है। और वह उनको अंधेरों में से रोशनी मे निकाल लाता है। और जो लोग कुफ्र(इनकार) की रविश इख्तियार करते हैं उनका हामी व मददगार तागूत है। और वे उन्हें रोशनी से अंधेरों की तरफ खींच ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं जहां ये हमेशा रहेंगे।

बकर 2: 256-257

(ऐ मुसलमानो) ये लोग अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं (हाजत रवां के रूप में) उन्हें गालियां न दो, कहीं ऐसा न हो कि ये शिर्क से आगे बढ़कर जहालत (अज्ञानता) के कारण अल्लाह को गालियां देने लगे ।

अनआम 6: 108

इजाजत दे दी गई उन लोगों को जिनके खिलाफ जंग की जा रही है क्योंकि वे मजलूम (जिन पर जुल्म किया गया) हैं। और अल्लाह निश्चय ही उनकी मदद करने की ताकत रखता है। ये वह लोग हैं जो अपने घरों से नाहक निकाल दिए गए, सिर्फ इस कसूर पर कि वे कहते थे 'हमारा रब एक है' अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के जरिए हटाता न रहता तो संतों के रहने की जगह (खानागाहें) और गिरजा और पूजाघर (नाअबद) और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का बहुत बार नाम लिया जाता है सब ढहा दी जाएं। अल्लाह जरूर उनकी मदद करेगा जो उसकी मदद करेंगे।

हज 22: 39-40

और जो कोई बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया और फिर उस पर ज्यादती भी की गई तो अल्लाह उसकी मदद जरूर करेगा ।

हज 22: 60

न तो अपना हाथ गर्दन से बाँध रखो और न उसे बिलकुल खुला छोड़ दो (सभी कुछ दे डालो) कि मलामत जदा आजिज (बेइज्जत और मोहताज) बन कर रह जाओ ।

बनी इस्राईल 17: 29

जो खर्च करते हैं तो न फिजूल (व्यर्थ) करते हैं न कंजूसी बल्कि उनका खर्च दोनों के बीच पर कायम रहता है।

फुरकान 25: 67

अपनी चाल में सहजता और संतुलन बनाए रख और अपनी आवाज धीमी रख। बेशक सब आवाजों से ज्यादा बुरी आवाज गधों की आवाज होती है।

लुकमान 31: 19

जिन लोगों ने भलाई का तरीका अपनाया उनके लिए भलाई है (बदले में) उससे भी

ज़्यादा है। और उनके चेहरों पर न तो कलौंस छाएगी और न ज़िल्लत (बेइज़्ज़ती)। वे ही जन्नत के अधिकारी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे।

यूनुस 10: 26

अहसान कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ अहसान किया है।

कसस 28: 77

जो लोग अपना माल रात और दिन छिपे और खुले खर्च करते हैं उनका बदला उनके रब के पास है और न उन्हें कोई डर है और न कोई दुख होगा।

बक़र 2: 274

उन्हें माफ कर देना चाहिए और दरगुजर करना चाहिए। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ करे? और अल्लाह तो माफ करने वाला और रहीम (दयालु) है।

नूर 24: 22

ऐ नबी नरमी और दरगुजर का तरीका अपनाओ, भलाई का हुक्म देते रहो और अज्ञानियों (जाहिलों) से न उलझो ।

आराफ 7: 199

(ऐ पैगम्बर) यह अल्लाह की बड़ी रहमत है (दयालुता, रहमदिली) कि तुम इन लोगों के लिए नरम मिजाज रहे हो, वरना अगर कहीं तुम कठोर मिजाज और सख्त दिल वाले होते तो ये सब लोग तुम्हारे पास से छंट (दूर चले) जाते, उनके कसूर माफ कर दो, इनके लिए मगफिरत (अल्लाह उन्हें कयामत के दिन माफ कर दे) की दुआ करो और मामलों में उनसे मशविरा कर लिया करो, और जब किसी मामले में राय बन जाए तो अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह को वे लोग पसंद हैं जो उसी के भरोसे पर काम करें ।

आले इमरान 3: 159

और ऐ नबी! नेकी और बदी एक जैसी नहीं हैं, तुम बदी (बुराई) को उस नेकी (भलाई) से दूर करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसकी दुश्मनी थी वह जिगरी दोस्त बन गया है।

हा.मीम.सजदा 41: 34

ऐ नबी बुराई को उस तरीके से दूर करो (मिटाओ) जो सबसे अच्छा हो

मोमिनून 23: 96

रहमान के असली बन्दे वे हैं जो जमीन पर नरम चाल चलते हैं और जब जाहिल (अज्ञानी) उनके मुंह आए (बहस करने लगे) तो कह देते हैं 'तुम को सलाम'।

फुरकान 25: 63

सबक – 9

समाज में रहने के नियम

सब मिलजुल कर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और तफरके (अलग अलग फिरकों में बंट जाना) में न पड़ो।

आले इमरान 3: 103

(अल्लाह की रस्सी का अर्थ कुरआन मजीद)

मोमिन तो एक दूसरे के भाई हैं इसलिए अपने भाइयों के दरमियान ताल्लुकात (संबंधों) को ठीक करो और अल्लाह से डरो। उम्मीद है कि तुम पर रहम किया जाए।

हुजुरात 49: 9

जब तुम्हारे पास वे लोग आएं जो हमारी आयात पर ईमान लाते है (यानी मुसलमान) तो उनसे कहो– "तुम पर सलामती है"। (सलामु अलेयकुम)

अनआम 6: 54

जो काम नेकी और परहेजगारी (अल्लाह के डर के कारण) के हैं उनमें सबको सहयोग दो और गुनाह (पाप) और हक मारने (अत्याचार व ज्यादती) के काम मे किसी का भी

सहयोग न करो।

माइदा 5: 2

बेटा। नमाज कायम कर, नेकी (भलाई) का हुक्म दे, बदी (बुराई) से मना कर, और जो मुसीबत भी पड़े उस पर सब्र कर।

लुकमान 31: 17

और यह है कि लोगों से भली बात कहो और नमाज कायम करो, जकात दो।

बकर 2: 83

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं। हो सकता है कि वे उनसे बेहतर (अच्छे) हों, और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों, एक दूसरे को ताने न दो, और न एक दूसरे को बुरे नाम से पुकारो। ईमान लाने के बाद नियम तोड़ने वालों में शुमार होना बहुत बुरी बात है।

हुजुरात 49: 11

छोड़ो उन लोगों को, जिन्होंने अपने धर्म (दीन) को खेल और तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की जिन्दगी ने फ़रेब (धोखे) में डाल रखा है। हाँ मगर यह क़ुरआन सुना कर नसीहत की, कहीं ऐसा ना हो कि वह आदमी अपनी करतूतों के कारण तबाही में पड़ जाए कि अल्लाह से बचने वाला कोई दोस्त (हामी, मददगार,) और सिफ़रिश करने वाला न हो।

अनआम 6: 70

अगर मोमिनों में से दो गिरोह आपस मे लड़ पड़े तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादती करे तो ज्यादती करने वालों से लड़ो यहाँ तक कि वे अल्लाह के हुक्म की तरफ पलट आएं तो उनके बीच न्याय के (इंसाफ) साथ सुलह करा दो और इंसाफ करो कि अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है।

हुजुरात 49: 9

और माफी मांगो (अल्लाह से) अपने कसूर के लिए भी और मोमिन मर्द और मोनिन औरतों के लिए भी ।

मुहम्मद 47: 19

और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करें जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो

अस्सलामु अलैयकुम कहा करो ।

अनआम 6: 54

जब कोई तुमसे सलाम करे तो तुम उसको उससे बेहतर तरीके से जवाब दो।

निसा 4: 86

और लोगों से भली बात कहो।

बकर 2: 83

और नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको।

लुकमान 31: 17

और उस आदमी से ज्यादा भली बात कहने वाला और कौन होगा जो अल्लाह की तरफ बुलाए और नेक काम करे और कहे- मैं मुसलमान हूँ।

हा मीम सजदा 41: 33

सबक़ - 10

परिवार (खानदान)

शादी

तुमसे पहले भी हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं और उनको हमने बीवी बच्चों वाला ही बनाया था।

रअद 13: 38

तुम में से जो मर्द और औरत बग़ैर शादी के हों उनका निकाह कर दो और अपने गुलाम व लौंडियां जो नेक हों उनका निकाह कर दो। अगर वे गरीब होंगे तो अल्लाह अपने फज़ल से उनको मालदार कर देगा और अल्लाह बड़ी समायी वाला और इल्म वाला है।

नूर 24: 32

और अल्लाह की निशानियों में एक अहम निशानी यह है कि उसने तुम्हारी ही सहजाती से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनके पास सुकून (शांति) पा सको और तुम्हारे

बीच मोहब्बत व रहमत पैदा कर दी ।

रूम 30: 21

(मुसलमानो !) तुन मुशरिक (बहुदेववादी) औरतों से हरगिज निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न ले आएं।

बकर 2: 221

जो तुम्हें पसन्द हो, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से शादी कर लो। किन्तु अगर तुम्हें डर हो कि तुम उनके साथ इंसाफ न कर सकोगे तो फिर एक ही बीवी रखो ।

निसा 4: 3

औरतों को भी भले तरीके पर वैसे ही अधिकार हैं जैसे मर्दों के अधिकार उन पर हैं।

बकर 2: 228

और मर्दों को औरतों पर एक दरजा फजीलत (ज्यादा) हासिल है। मर्द औरतों के संरक्षक और निगरां है, क्योंकि अल्लाह ने उनसे कुछ को कुछ के मुकाबले में आगे रखा है।

निसा 4: 34

औरतों के साथ नेक सलूक की जिन्दगी गुजारो। फिर अगर वे तुम्हें (किसी वजह से) नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज तुम्हें पसन्द न हो, मगर अल्लाह ने उसमें (तुम्हारे लिए) बहुत कुछ भलाई रख दी हो।

निसा 4: 19

पस जो नेक रविश रखने वाली औरतें हैं वे मर्दों की सेवा करने वाली होती हैं। और वे मर्दों के पीछे (गैर हाजरी में) अल्लाह की निगरानी में उनके अधिकारों और अमानतों की हिफाजत करती हैं।

निसा 4: 34

तलाक

और अगर तुम्हें पति-पत्नी के बीच बिगाड़ का डर हो तो एक फैसला करने वाला पंच मर्द के लोगों में से और एक फैसला करने वाला औरत के लोगों में मुकर्रर (नियुक्त) करो। अगर दोनों सुधार करना चाहेंगे तो अल्लाह उनके बीच मेल की सूरत पैदा कर देगा, अल्लाह को सब कुछ मालूम है और वह हर चीज से बाखबर है।

निसा 4: 35

(तलाक के बारे में सूरह निसा व सूरह तलाक पढ़ें)

परदा (हिजाब)

अपने घरों में चैन से बैठी रहो और जाहिलियत की सी सज धज दिखाती न फिरो, नमाज कायम करो, जकात दो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो।

अहजाब 33: 33

और अपने पांव जमीन पर इस तरह मारती हुई न चला करो कि उनकी छिपी हुई जीनत लोगों को मालूम हो जाए और अपने सीनों पर दुपट्टे डाले रहो और अपने बनाव सिंगार को जाहिर न होने दो।

नूर 24: 31

और अपने सतर की हिफाजत करो और मोमिन मर्दों को हिदायत की जाए कि अपनी निगाह नीची रखें।

नूर 24: 30

ऐ नबी! अपनी बीवियों, बेटियों और ईमान वाली औरतों से कह दो कि (बाहर निकलें तो) अपने ऊपर चादरों के पल्लू लटका लिया करें यह ज्यादा मुनासिब तरीका है ताकि वे पहचान ली जाएं और न सताई जाएं, अल्लाह गफूरुर रहीम (माफकरने वाला,

दयावान) है।

अहज़ाब 33: 59

और मोमिन औरतों से कहिए कि अपनी निगाहें नीची रखें।

नूर 24: 31

और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें यह उनके लिए ज्यादा पाकबाजी की बात है जो कुछ ये करते हैं अल्लाह उससे पूरी तरह वाकिफ है।

नूर 24: 30

मां बाप के साथ सुलूक

और यह हकीकत है कि हमने इन्सान को अपने मां बाप के हक पहचानने की खुद ताकीद की है। उसकी मां ने निढ़ाल (दु:ख) पर निढ़ाल होकर उसे पेट में रखा। दो साल उसके दूध छूटने में लगे (इसीलिए हमने उसको नसीहत की) कि मेरा शुक्र अदा कर और अपने मां बाप का शुक्र बजा ला। आखिर तुम्हें मेरी ही तरफ पलटना है।

लुकमान 31: 14

तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम लोग किसी की इबादत न करो मगर सिर्फ उसकी (अल्लाह की)। मां बाप के साथ नेक सुलूक करो। अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें उफ् तक न कहो। न उन्हें झिड़क कर जवाब दो, बल्कि उनसे एहतराम (आदर) के साथ बात करो और नरमी व रहम (दया) के साथ उनके सामने झुक कर रहो और यह दुआ किया करो 'परवरदिगार इन पर रहम फरमा जिस तरह इन्होंने रहमत व शफक़त (लाड़ प्यार) के साथ मुझे बचपन में पाला था'।

बनी इस्राईल 17: 23-24

हमने (अल्लाह ने) इन्सान को हिदायत (ताकीद) की वह अपने मां बाप के साथ नेक सुलूक (व्यवहार) करे। उसकी मां ने उसे (पेट में) तकलीफ के साथ उठाए रखा, और उसे जना भी तकलीफ के साथ। और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने में तीस महीने लग गए। यहां तक वह पूरी ताकत को पहुंचा तो चालीस साल का हो गया तो उसने कहा:

'ऐ मेरे रब मुझे तौफीक (प्रेरणा) दे कि मैं तेरी उन नेमतों का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझे और मेरे मां बाप को अता फरमाई (दी), और ऐसा नेक अमल करूं जिससे तू राजी हो और मेरी औलाद को भी नेक बनाकर मुझे सुख दे। मैं तेरे हुजूर तौबा करता हूं और तावे फरमान (मुस्लिम, आज्ञाकारी) बन्दो में से हूं' इस तरह के लोगों से हम उनके बेहतरीन आमाल (कर्म) को कुबूल करते हैं और उन्हें बुराइयों से दर गुजर कर जाते हैं।

अहकाफ 46: 15-16

लोग आपसे पूछते हैं 'हम क्या खर्च करें ?' उनसे कह दीजिए तुम जो माल भी खर्च करो, पस इसके लिए पहले हकदार मां बाप हैं।

बकर 2: 215

औलाद (संतान) के हक

और अपनी औलाद को गरीबी के डर से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रिज्क (रोजी-रोटी) देंगे और तुम्हें भी। हकीकत यह है कि उनका कत्ल करना बहुत ही बड़ा गुनाह है।

बनी इस्राईल 17: 31

मुसलमानो! अपने आपको और घर वालों को जहन्नुम की आग से बचाओ।

तहरीम 66: 6

मेरी औलाद को नेक बनाकर मुझे सुख दे।

अहकाफ 46: 15

और तुम्हारी औलाद और माल आजमाइश है और उसके पास बदला (अज्र देने के लिए बहुत कुछ है।

अनफाल 8: 28

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज तुम्हारे दुश्मन हैं। उनसे होशियार रहो और तुम अफु व दरगुजर (टाल जाओ) से काम लो और माफ कर दो तो अल्लाह गफुरुर रहीम है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो एक

आजमाइश हैं और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा अज्र है।

तगाबुन 64: 14–15

रिश्तेदारों और जरूरतमंदों के अधिकार

अल्लाह एहसान और सिले रहमी का हुक्म देता है। और बदी व बेहयाई और ज़ुल्म और ज्यादती से मना करता है।

नहल 16: 90

रिश्तेदारों को उनका हक दो और मिसकीन व मुसाफिर को उसका हक दो और फिज़ूलखर्ची न करो।

बनी इस्राईल 17: 25

और जब तकसीम मिरास के मौके पर कुनबे के लोग और यतीम और मिसकीन आएं तो उस माल (तरके) में से उनको भी कुछ दो और उनसे भली बात करो।

निसा 4: 8

और मां बाप के साथ नेक सुलूक करो। रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों के साथ भले सुलूक से पेश आओ।

निसा 4: 36

लिहाजा यतीम पर सख्ती न करो।

अज्जुहा 93: 9

सबक -11

आर्थिक जीवन

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जब पुकारा जाए नमाज के लिए जुमे के दिन तो अल्लाह के जिक्र की तरफ दौड़ो और खरीदना बेचना छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।

जुमुआ 62: 9

उनमें से ऐसे लोग सुबह व शाम उसकी तसबीह करते हैं जिन्हें तिजारत और खरीदना-बेचना अल्लाह की याद से और अक़ामते नमाज व अदाए जकात से गाफिल नहीं कर देता।

नूर 24: 37

हमने तुम्हें जमीन पर सत्ता (इख्तियारात) के साथ बसाया है और तुम्हारे लिए जीने का सामान दिया है ।

आराफ 7: 10

गैर अल्लाह पर चढ़ावा

तुम पर हराम किया गया मुर्दार, खून, सूअर का गोश्त। वह जानवर जो अल्लाह के सिवाय किसी और के नाम पर जिबह किया गया हो (जिसको जिबह करते वक़्त अल्लाह के

सिवाय किसी और का नाम लिया गया हो या जिसको जिबह करने से पहले यह नियत की गई हो कि यह फलां बुजुर्ग या फलां देवी देवता की नजर है। मिन्नत, नजर व सदका अल्लाह के सिवाय दूसरे के नाम की नहीं मानी जा सकती) या गला घोंट कर, या चोट खाकर या ऊंचाई से गिरकर, या टक्कर खाकर मरा हो, या जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो। सिवाय उसके जिसे तुमने जिन्दा पाकर जिबह कर लिया। वह जो किसी आस्ताने पर जिबह किया गया हो (आस्ताना या स्थान जो किसी बुजुर्ग या देवता से या किसी खास मुशरिकाना एतेकाद से संबंध हो, ऐसे किसी आस्ताने पर जिबह किया जानवर भी हराम है। (तफहीमुल कुरआन (तलखीस) पेज-183, नोट-12) और आगे यह कि यह भी तुम्हारे लिए नाजायज है कि पांसों के जरिए अपनी किस्मत मालूम करो।

माइदा 5: 3

फिजूलखर्ची

फिजूलखर्ची न करो फिजूलखर्च लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है।

बनी इस्राईल 17: 27

(लोगो!) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने गाफिल कर दिया है। यहां तक कि तुम कब्रों में जा पहुंचे। देखो तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।

तकासूर 102: 1-3

आदमी का उस माल में एक हिस्सा है जो मां बाप और रिश्तेदारों ने छोड़ा है।

निसा 4: 7

(उत्तराधिकारी के रूप में मिलने वाले हिस्से का विस्तृत वर्णन सूरा निसा में पढ़ें)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! मैं बताऊं तुम्हे तिजारत जो तुम्हें बड़े अजाब से बचा ले? ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और कोशिश करो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम जानो।

सफ्फ 61: 10-11

और उनके मालो में मांगने वालों और वंचित गरीबों का हक होता है।

जारियात 51: 19

चोरी की सजा

और चोर, औरत हो या मर्द दोनों के हाथ काट दो यह उनकी कमाई का बदला है। और अल्लाह की तरफ से सबक देने वाली सख्त सजा है।

माइदा 5: 38

वही है जिसने तुमको जमीन का खलीफा बना दिया और तुम में से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की तुलना में ऊंचे रखे ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें तुम्हारी आजमाइश (परीक्षा) करे।

अनआम 6: 165

और एक दूसरे का माल ना हक न खाया करो, ना हाकिमों (अधिकारियों) को रिश्वत पहुंचा कर किसी का कुछ माल जुल्म व सितम से हड़प लिया करो।

बकर 2: 188

अगर तुम में से कोई व्यक्ति दूसरे पर भरोसा करके उसके साथ मामला करे तो जिस पर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि अमानत अदा करे और अपने रब से डरे और गवाही (शहादत) हरगिज न छिपाओ।

बकर 2: 283

और जो कोई खयानत (उसके पास छोड़ा हुआ माल या वस्तु हड़प ले) करे तो वह अपनी खयानत समेत क्यामत के दिन हाजिर हो जाएगा। हर व्यक्ति को उसकी कमाई का पूरा बदला मिल जाएगा।

आले इमरान 3: 161

नाप तोल में धोखाधड़ी

तबाही है डंडी मारने वालों के लिए जिनका हाल यह है कि जब लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, और जब उनको नाप कर या तौल कर देते हैं तो उन्हें कम देते हैं।

मुतफ्फिफीन 83: 1-3

बेशर्मी और अश्लीलता

और बेशर्मी की बातों के करीब न जाओ चाहे वे खुली हों या छुपी।

अनआम 6: 151

(कुरआन में जिना, व्यभिचार, समलैंगिक संबंध, नंगापन, झूठी तोहमत को फहश कामों में गिना गया है। हदीस में चोरी और शराब पीने और भीख मांगने को भी फवाहिश में गिना है। तफहीमुल कुरआन तलखीस पेज-246)

ब्याज (सूद)

मगर जो लोग सूद (ब्याज) खाते हैं उनका हाल उस आदमी का सा होता है जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। और इस हालत में उनके शामिल होने की वजह यह है कि वे कहते हैं 'तिजारत (व्यापार) भी तो ब्याज ही जैसी चीज है' हालांकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल किया है और ब्याज को हराम (अवैध, कानून के विरूद्ध) ठहराया है। इसलिए जिस आदमी को उसके रब की तरफ से यह नसीहत पहुंचे और वह ब्याज खाने से बाज (रुक) आ जाए तो जो कुछ पहले खा चुका सो खा चुका उसका मामला अल्लाह के हवाले है, और जो इस हुक्म के बाद फिर यही कर्म किया तो वह जहन्नुमी है जहां वह हमेशा रहेगा। अल्लाह सूद (ब्याज) को घटाता है और दान (सदकात) को बढ़ाता है। ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो, और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर बाकी रह गया है, उसे छोड़ दो अगर सच में ईमान लाए हो। लेकिन अगर तुम ने ऐसा नहीं किया तो जान लो कि अल्लाह और उसके रसूल (स.अ.व.) की तरफ से तुम्हारे खिलाफ जंग का ऐलान है। और अगर तौबा (अल्लाह से माफी) कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम जुल्म करो न तुम पर जुल्म किया जाए। तुम्हारे कर्जदार तंगदस्त (चुकाने की क्षमता न हो) हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत दो और जो सदका (दान) कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा अच्छा है, अगर तुम समझो।

बकर 2: 275-280

जमाखोरी और मुनाफाखोरी

बड़ी तबाही है उस आदमी के लिए जो लोगों पर ताने और उनकी बुराइयां करता है। जिसने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा। वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा। हरगिज नहीं वह आदमी तो चकनाचूर करे देने वाली जगह में

फेंक दिया जाएगा। और तुम क्या जानो चकनाचूर कर देने वाली जगह? अल्लाह की आग खूब भड़काई हुई जो दिलों तक पहुंचेगी ।

हु-म-जह 104: 1-7

और जो लोग सोने चांदी का खजाना रखते हैं। और अल्लाह की राह (रास्ते) में खर्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अजाब की खबर पहुंचा दीजिए।

तौबा 9: 34
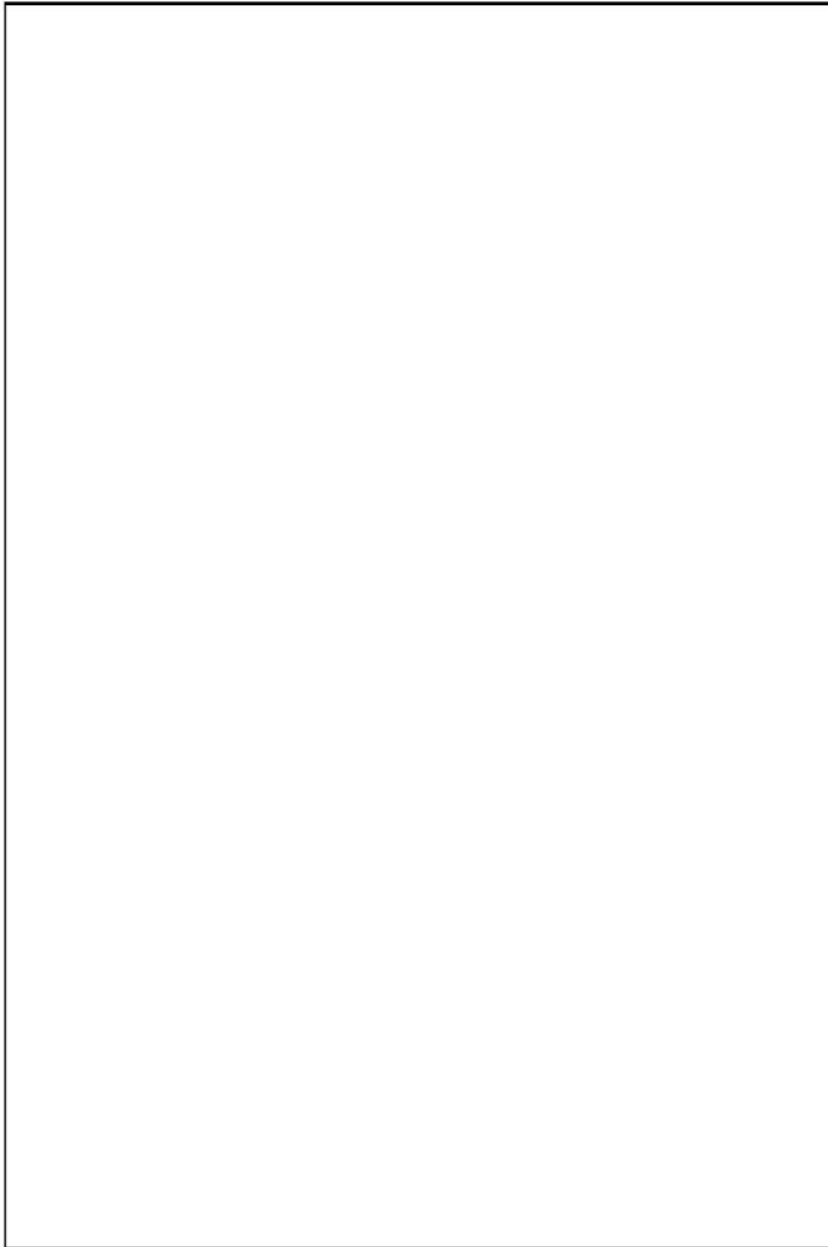
सबक़ - 12

इस्लामी समाज का मिशन
(नस्बुलएन, मकसद)

अल्लाह के नजदीक दीन सिर्फ इस्लाम है ।

आले इमरान 3: 19

हकीकत में तो मोमिन वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल (स.अ.व.) पर ईमान लाए फिर उन्होंने कोई शक न किया और अपनी जानों और मालों से अल्लाह की राह में जेहाद किया, वे ही सच्चे लोग हैं।

हुजुरात 49: 15

सब मिलजुलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और तफरके (विवाद, विभेद) में न पड़ो।

आले इमरान 3: 103

जमाने की कसम।
इंसान दर हकीकत घाटे में हैं।
सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाएं
और नेक आमाल करते रहें और

एक दूसरे को हक की नसीहत और
सब्र की तलकीन करते रहें।

अस्र 103: 1-3

और इसी तरह हमने मुसलमानों को एक "उम्मते वस्त" (एक ऐसा ऊंचे दर्जे का गिरोह जो इन्साफऔर मध्यम मार्ग पर चले जिसका ताल्लुक सबके साथ एक से अधिकार और सच्चाई के साथ हो) बनाया है ताकि तुम दुनिया के लोगों पर गवाह रहो और रसूल तुम पर गवाह है।

बकर 2: 143

अब दुनिया में वह बेहतरीन गिरोह तुम हो जिसे इन्सानों की हिदायत और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो, बदी से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

आले इमरान 3: 110

उसने (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए दीन का वही तरीका मुकर्रर किया है जिसका हुक्म उसने नूह को दिया था और जिसे (ऐ मुहम्मद स.अ.व) अब तुम्हारी तरफ हमने वही के जरिए से भेजा है और जिसकी हिदायत हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ ही कायम करो इस दीन को और इसमें विभाजित न हो जाओ।

शूरा 42: 13

हकीकत यह है कि अल्लाह किसी कौम के हाल नहीं बदलता जब तक वह खुद अपने आपको नहीं बदल देती।

रअद- 13: 11